

SHRI SOM PAL: Welcome, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): The Finance Minister, please.

**SUPPLEMENTARY DEMANDS FOR GRANTS (GENERAL), 1997-98  
(AUGUST, 1997)**

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI P. CHIDAMBARAM): Mr. Vice-Chairman, Sir, I beg to lay on the Table a statement (in English and Hindi) showing the Supplementary Demands for Grants (General) 1997-98 (August, 1997).

Thank you, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Som Palji, you may continue now.

**SHORT DURATION DISCUSSION ON THE PREVAILING SITUATION IN BIHAR—(contd.)**

श्री सोमपाल : महोदय, मैं यह कहना चाहता हूँ कि इस दिल्ली महानगरी में मैं भी 1957 में गांव से आया था और मैंने भी पढ़ना-लिखना वहां सीखा जहां धरती के ऊपर अक्षर बनाने सीखे थे अंगुली से। उस समय न कलम थी, न तख्ती थी, न दवात थी और न स्याही थी। उस समय में छठी से लेकर दसवीं तक अपने गांव की पास के कस्बे में साढ़े पांच किलोमीटर रोज जाता था और साढ़े पांच किलोमीटर वापस आता था। वहां रास्ते में दो पानी पिलाने की प्याऊ पड़ती थी एक पंडित जी की थी और एक लाला जी की थी। मैं एक ऐसे वर्ग से आता हूँ, मैं जाति का मानता नहीं हूँ और उसका प्रमाण यह है कि मेरे पिताश्री ने जब मेरा नाम विद्यालय में अंकित कराया तो उसके सामने जाति सूचक कोई शब्द नहीं था। मेरे से छोटा नाम यहां किसी सासंद का नहीं है सोमपाल। ... (व्यवधान)....

श्री राघवजी (मध्य प्रदेश) : मेरा छोटा नाम है राघवजी।

श्री गोविन्दराम मिरी : राघवजी है।

श्री सोमपाल : उनके सामने जी लगा है और राघव लगा है। मैं यह कहना चाहता हूँ कि उस समय मैंने व्यक्तिगत रूप से देखा है। मैं यह किसी किताब में से तर्क ढूँढ कर नहीं लाया हूँ, किसी पुस्तक में से नहीं लाया हूँ। जब हम जाते थे तो वह दो पानी की प्याऊ

पड़ती थी। जब हम पानी पीते थे तो दोनों प्याऊ के ऊपर यह नियम था कि बीच में ढाक का पत्ता या लकड़ी की नुलकी लगा दी जाती थी कहीं यह पानी मिट नहीं जाए। यह तो हमारी जाति के साथ, जो कि एक मध्यम जाति जाटों की, उसके साथ व्यवहार था। ... (व्यवधान)....

डा. रणबीर सिंह (उत्तर प्रदेश) : यह गलत बात कर रहे हैं।

श्री सोमपाल : मैं सन् 1951 से 1956 की बात कर रहा हूँ। अग्रवाल जी आप जहां से आ रहे हैं वहां तो जूतें नहीं पहनने दिए जाते हैं, शर्म नहीं आती है आप लोगों की।

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) : नहीं-नहीं अग्रवाल जी नहीं बोल रहे हैं।

डा. रणबीर सिंह : आप ऐसी बात मत कहिए।

श्री सोमपाल : उपसभाध्यक्ष महोदय, उनको नियमित करिए....

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) : नहीं, डाक्टर साहब कह रहे हैं, डाक्टर साहब ने कहा है। ... (व्यवधान)....

डा. रणबीर सिंह : मैं तो उस इलाके में इनसे पहले से जी रहा हूँ ऐसा कभी नहीं हुआ।....

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी) : चलिए आप अपने विषय पर बोलिए। नहीं तो आपके विचारों की जो कड़ी है वह गड़बड़ हो जाएगी।

श्री सोमपाल : महोदय, मेरे विचारों की कड़ी किसी से गड़बड़ नहीं होती है परन्तु इसका मतलब यह है कि मेरे ऊपर मिथ्याचार का आरोप लग रहा है।...

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) : मिथ्याचार का आरोप नहीं है।

श्री सोमपाल : इसको मैं कैसे मान लूँ। मैं तो अपने पर बीती हुई बात कह रहा हूँ। डाक्टर साहब तो बहुत पहले अमेरिका पढ़ने के लिए चले गए थे। ये बड़े घर से आते हैं और हमारे पास दिल्ली विश्वविद्यालय की फीस नहीं थी।

डा. रणबीर सिंह : यह दूसरी गलत बात कह रहे हैं।

श्री सोमपाल : आप 1958 मे अमेरिका गए नहीं.....

उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) : बाद में गए हैं, उतनी जल्दी नहीं गए हैं।

**श्री सोमपाल :** उपसभाध्यक्ष महोदय, उनका उत्तर तो देना पड़ेगा। अब मैं सी.बी.आई. की भूमिका पर आता हूँ। इससे कुछ सवाल खड़े होते हैं। मैं बहुत सक्षम प्रयोग कर्मीकि मुझे समय-सीमा का ध्यान है। बार-बार सी.बी.आई. के अधिकारियों का इस प्रकार से प्रेस में जाना और वक्तव्य देना, यह एक नया युग चला है व्यक्तिगत प्रशस्ति का अधिकारियों के द्वारा और इसमें कोई नाम आते हैं – कोई अल्फोस, कोई खेरनार और विश्वास और हमारे जो मुख्य चुनाव आयुक्त थे। यदि इन लोगों को धर्मायोद्धा बनने का इतना ही शौक है तो उस राजकीय पदाधिकार और उसकी सुरक्षा के आवरण से बाहर आ कर के सड़क पर आयें राजनीति करें, उनका स्वागत है, कोई मना नहीं करता है और यह भी पता लगा गया कि हमारे शेषन साहब कितने लोकप्रिय हैं और वहाँ जाकर ढूँढे। यह भी सबके सामने आ गया।

....(व्यवधान)....

**श्री सतीश प्रधान :** हमारे पास ही आए न। हम काहे के लिए डुबोये ... (व्यवधान)...

**श्री सोमपाल :** मैं तो मानता हूं कि उनको डुबाने में आपका श्रेय है। ...**(व्यवधान)**... हम तो सबको साथ लेकर जीना चाहते हैं आपको उसमें क्यों तकलीफ हो रही है...**(व्यवधान)**... मैं यह कहना चाहता हूं कि उनके पीछे एक व्यक्तिगत महत्वकांक्षा काम कर रही है। जैसा कि हमारे साथी अहलुवालिया जी ने कहा राज्य के अधिकारियों को इस प्रकार की व्यक्तिगत श्लाघा किसी प्रकार शोभनीय नहीं है और यह पूरी आचार सहिता के और उनको प्राप्त अधिकारों और उनको दिए गए कर्तव्यों की स्पष्ट उल्लंघन है और अवहेलना है। मैं यह बात कहना चाहता हूं कि वे बार-बार प्रेस में कहते हैं। जब तक मैं लालू को हथकड़ी नहीं लगाऊंगा तब तक मेरी आत्मा को शांति नहीं मिलेगी। यह अखबार में इन्वर्टिड कॉमा में छपा है। हम तो मिले नहीं उनसे कभी। और रही बात सी.बी.आई. के अभियोग की, उनका एक के बाद एक अभियोग निष्फल और विफल होता जा रहा है, माननीय अडवाणी जी ने सदन से त्याग पत्र दे दिया, खुराना जी को मुख्य मंत्री पद से हटना पड़ा। इससे पहले श्री अंतुले जी के साथ यही हुआ था। क्या उनका वह समाज और उनका वह गौरव लौटा दिया गया? इस प्रकार के विचारहीन और विवेकहीन अभियोजना पर मैं आक्षेप करना चाहता हूं, इस के ऊपर आपत्ति करना चाहता हूं। यदि बिल्कुल निःसंदेह रूप से यह बात स्थापित हो गई कि कोई व्यक्ति इसमें दोषी है कि सारे कानून और विधान की मूल मान्यता है जिसको चर्चा अहलुवालिया जी ने भी कि जब तक कोई

व्यक्ति पूर्ण रूप से दोषी नहीं मान लिया जाता है तब तक उसको निर्दोष ही माना जायेगा । इस व्यवस्था की धज्जियां उखाड़ने और उधेड़ने के काम इस आधुनिक दौर में इस सी.बी.आई. जैसी ऐजेसियों ने किया है । यह बहुत उत्साह में काम करना चाहते हैं, हीरो बनाना चाहते हैं तो उनका स्वागत है । बाहर आये लोगों में जाये जैसी हम और आप लोग जाते हैं और लोगों का भला बुरा सुने परन्तु राजपद के ऊपर रहकर उनका यह कहना किसी भी प्रकार से उचित नहीं माना जा सकता ।

दूसरी बात यह है कि 5 आई.ए.एस. अधिकारियों और एक राजस्व अधिकारी के विरुद्ध अभियोग चलाने की अनुमति केन्द्रीय सरकार से सी.बी.आई. ने मांगी और उसको अनुमति मिली 3 के विरुद्ध। यदि सीबीआई की बात चलती तो उन दो कि और दुर्गति हो जाती। इसका सीधा-साधा मतलब यह था कि बिना पूरा विचार किये, बिना पूरी अन्वेषण के वे उनके ऊपर अभियोग चलाना चाहते थे, यह उनकी विश्वसनीयता के ऊपर बहुत बड़ा प्रश्न खड़ा करती है। कैसे विश्वास किया जायेगा सी.बी.आई. की जांच का? रही लालू जी की बात। पूरी जांच सम्पन्न हो चुकी थी। न्यायालय ने उनकी जमानत मना कर दी। वे सर्वोच्च न्यायालय तक गये और 29 की दोपहर को सर्वोच्च न्यायालय ने भी अग्रिम जमानत देने से इंकार कर दिया। जैसे ही सूचना मिली, लालू प्रसाद जी ने यह घोषणा कर दी कि कल सुबह मैं खेच्छा से न्यायालय के समक्ष उपस्थित हो जाऊंगा। इससे पहले मैं यह कहना चाहता हूं कि जिस कारण से जो विद्वेष और पक्षपात की गंध आती है यही विश्वास बहुत लम्बा-चौड़ा तर्क कर चुके थे कि लालू प्रसाद फार्डिनेन्ट मार्कोस की तरह देश छोड़कर भाग जायेंगे। उन्होंने पहले ही ऐसी कल्पना कर ली थी। यह एक निराधार पहले ही ऐसी कल्पना कर ली थी। यह एक निराधार आरोप था जिसकी पत्ती वंहा मुख्य मंत्री है, जिसका परिवार है, घर है, रिश्तेदार है, सारा देश है कहीं कोई लक्षण दूर तक नहीं है, उसके ऊपर इस प्रकार मिथ्या और पूर्वाग्रहग्रस्त आरोप लगाना किसी दृष्टि से उचित नहीं माना जा सकता। मैं दोबारा जोर देकर कहना चाहता हूं कि यह उनके व्यक्तिगत विद्वेष और दुर्भावना से आत-प्रोत बात थी। पहले उन्होंने कहा कि वे चीफ मिनिस्टर और वहां दस्तावेजों में जो साक्ष्य उपलब्ध हैं, फाइलों के ऊपर उनमें फेरबदल कर देंगे। परन्तु जब वे अपने पद से त्यागपत्र भी दे चुके थे, अभी जेल भी चले गये, और उसके बाद उनसे बिना अनुमति के किर एक कानून और नियम का उल्लंघन करके मिलने जाते हैं, जिसका उद्धरण, जिसकी चर्चा श्री अहलुवालिया जी ने की है। क्या परिस्थिति थी कि उन्हें सेना के पास जाना

पड़ा। शांति व्यवस्था भंग नहीं हुई थी, संवैधानिक मशीनरी बरकरार थी, एक बाकायदा चुनी हुई सरकार थी, नागरिक प्रशासन ने उन्हें सहयोग देने से मना नहीं किया था। केवल कुछ समय अवश्य माग था और मना भी करते या विलम्ब करते, तो सी.बी.आई. का यह कर्तव्य था कि पुनः न्यायालय में जाते। उस पूरी प्रक्रिया के कम्प्लीट किये बगेर पहले ही यह अनुमान लगा लेना और आरोप देना और मिलिटरी के पास जाना यह स्पष्ट रूप से आचार-संहिता का और अपने कर्तव्यों का उल्लंघन है, कानून का उल्लंघन है। वारंट की तामील करने के लिए उन्हें 6 अगस्त तक की अवधि मिली थी तो क्या जल्दी थी? उनके अदंर एक भावना थी बदले की। वे चाहते थे कि आज रात को ही इनको हमें अपमानित करना है, इसका और कोई कारण समझ में नहीं आता। और फिर कहते हैं कि न्यायालय के पास रात को गये। क्या आम आदमी को, गरीब आदमी को न्यायालय रात को सुनता है।

जिसकी बच्ची का रेप हो जाता है, जिसकी हत्या हो जाती है, घर में डकेती हो जाती है, जिसको भ्रष्ट पुलिस अधिकारी बिना कानून के और वांट के उठा कर ले जाते हैं, हाथ पैर तोड़ देते हैं, उसमें न्यायालय नहीं सुनता इसमें न्यायालय की उदारता कहां से आ गई यह मेरी समझ में नहीं आया? यह गृह मंत्री जी से पूछना चाहूंगा। यह खुफिया एजेंसियों की रिपोर्ट है कि विस्वास साहब वहां के न्यायाधीशों के घर रात को जाते हैं, उनके साथ भोजन करते हैं और सुरापान भी करते हैं। क्या गृह मंत्री महोदय इसकी जांच कराएंगे? इनकी फाइलों में है, मेरी जानकारी के अनुसार। फिर कहते हैं कि मौलिक आदेश। कोई प्रावधान मौलिक आदेश का न्यायालय की व्यवस्था में नहीं है अहलुवालिया जी ने ठीक कहा कि सारी न्यायपालिका प्रक्रिया किसी निर्धारित विधि-विधान के तहत चलती है। न्यायालय का काम प्रशासन में कानून और संविधान को लागू करने का है और इसके लिए पूरी स्पष्ट व्यवस्था है, उल्लेख है, तौर तरीका बताया गया है। आज प्रातः काल के नई दिल्ली के एक अखबार में एक सुप्रसिद्ध विधि विशेषज्ञ श्री पी.पी. राव का एक छोटा का लेख छपा है, यह मेरे हाथ में 5 कालम का लेख है, इसमें विस्तार से वर्णन से वर्णन किया गया है। मैं पढ़ूंगा नहीं क्योंकि समय व्यर्थ होगा। ... (समय की घंटी) ... मैं अपनी बात एक मिनट में समाप्त कर दूँगा। इसमें अंत में उन्होंने कहा है कि कोई इस तरह का प्रावधान नहीं है, न्यायालयों में बाकायदा उसकी धोषणा इन्होंने मौखिक आदेश दे दिया। उस आदेश को लेकर

सी.बी.आई. के अधिकारी जो अपने आप को बहुत विद्वान और बड़ा कार्यकुशल और उत्तरदायी मानते हैं, वह चले गए सेना के पास। यह तो ईश्वर की कृपा रही, सेना के अधिकारियों का विवेक बना रहा, उन्होंने उस अनुचित और अवैधानिक मांग को माना नहीं, नहीं तो कितनी भयावह स्थिति पैदा हो सकती थी, अगर सेना की एक सशस्त्र टुकड़ी वहां आ जाती और फायरिंग हो जाती। इसके पीछे क्या मंशा थी, किसी की हत्या करवाना चाहते थे, सिविल वार करवाना चाहते थे, गृह युद्ध की स्थिति पैदा करना चाहते थे जिसमें मिलिटरी बुलानी पड़ती, ऐसी स्थिति पैदा करना चाहते थे। यह तो किसी भी प्रकार से अपेक्षित नहीं था। साथ-साथ कानून और संविधान की सारी मान्यताओं को परम्पराओं को जिनकी चर्चा अग्रवाल जी करना चाहते हैं, सब का खुला और नंगा उल्लंघन है। इकोनोमिक टाइम्स में आज छपा है कि विस्वास ने वहां के नागरिक प्रशासन से मदद मांगी कि मैं शहर में जाना चाहता हूं। मुहल्लों और सड़कों पर घूम कर पत लगाना चाहता हूं कि लोगों की वास्तविक प्रतिक्रिया क्या है इसके संबंध में। क्या यह उनका काम है? क्या सारे बिहार की शासन व्यवस्था को दरोगा और इंस्पेक्टर चलाएंगे, यह मैंने उस दिन भी कहा था। हम क्या सब बैठ कर के भाड़ झोकेंगे? उनको अधिकार नहीं था, यह भी आज के अखबार में छपा है, पटना के हवाले से छपा है। हम नहीं कर रहे हैं। आपने मारपीट और हाथपाई की बात की। जलसे, जुलूस में जहां इतनी भीड़ हो वहां इस प्रकार की छूट-पुट घटनाएं हो जाना स्वाभाविक बात है। परन्तु उस दिन जब बिहार राज्य पुलिस के महानिदेशक, मुख्य सचिव न्यायालय में गये तो वहां के तथकथित संग्रात वकील लोगों ने जो बुद्धिजीवी कहे जाते हैं इसमें ज्यादातर उन लोगों की बहुतायत है, बहुमत है जो इन बड़ी जातियों के लोग आते हैं उन दोनों अधिकारियों, से मारपीट की और मुख्य न्यायाधीश को बहार आकर, एस्सोसियेशन के मैम्बर्स को जुटा कर उनकी प्रताड़ना करनी पड़ी, बीच-बचाव करना पड़ा। इस बात की भी गृह मंत्री भी जांच करें कि किस प्रकार यह बात हुई। आप हमें शालीनता सिखाना चाहते हैं। वर्षी वकील जिनको मानद अधिकारी माना जाता है न्यायालय का और वकील मिल कर सवोच्च अधिकारियों से इस तरह से मारपीट करें, हमें कानून बताया जाता है, शान्ति और व्यवस्था की बात कही जाती है और नागरिक उत्तरदायित्व की बात समझाई जाती है। मैं गृह मंत्री महोदय से अंत में एक बात कहना चाहूंगा। कि न्यायालय के अधिकार क्षेत्र की बात भी इसमें आती है। क्या न्यायालय के न्यायाधीशों को यह अधिकार है

कि जो कानून में नहीं मिला, संविधान में नहीं लिखा, बल्कि उसके विरुद्ध इस प्रकार का आदेश दे दिया जाए कि जिसको कोई मानने पर बाध्य नहीं हो। और यह वास्तव में हुआ। अब वह उनके खिलाफ तो न्यायालय की अवमानता का मामला बनाना चाह रहे हैं। राज्य प्रशासन के अधिकारी, क्या सैनिक अधिकारियों के विरुद्ध भी बनायेंगे न्यायालय वाले, इस सवाल का इस दृष्टिकोण से जांच किया जाना भी आवश्यक है, और मंत्री महोदय और सरकार से चांगोंगा कि वह सर्वोच्च न्यायालय से और न्यायिकों से इसके संबंध में चर्चा करें और यदि कोई ऐसी व्यवस्था नहीं है तो ऐसी व्यवस्था की जाए। क्योंकि अगर ऐसी बात की है तो न्यायाधीश भी इस व्यवस्था से ऊपर नहीं है। ऐसे मामले हुए हैं कि जहां न्यायाधीशों ने अपने अधिकारों का उल्लंघन या अतिक्रमण किया हो तथा उनके विरुद्ध महाभियोग चले इस एंगल से भी, इस दृष्टिकोण से भी इस सारी घटना पा चांज किया जाना आवश्यक है। उसके बाद अंत में वह सी.बी.आई. के अधिकारी विस्वास महोदय जेल गए मैंनुअल का उल्लंघन करके और दूसरे को वह कानून और दूसरी बात बताते हैं। कानून में इसकी स्पष्ट रूप से मनाही तो है। मिथ्याचार के आरोप में क्या सरकार उनके विरुद्ध मुकदमा चलायेगी या नहीं और क्या कार्यवाही करेगी, यह भी मैं गृह मंत्री महोदय से जानना चाहता हूँ?

इसी के साथ मैं अपनी बात को समाप्त करता हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

**उपसभापति (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :**  
धन्यवाद, सोमपाल जी।

श्री नीलोत्पल बसु। आपके दस मिनट हैं।

**SHRI NILOPAL BASU (West Bengal):**  
Mr. Vice-Chairman, Sir, I am actually aware of the constraint of time. Therefore, I do not intend to go through the historical journey which this House has traversed this morning. I think history is also quite confusing because people have spoken and recognised the great merits of the former Chief Minister of Bihar. If we go through the past proceedings, we have heard with equal eloquence allegations. Subsequently today they have been repeated. I think history doesn't always help us in understanding the issue. Sometimes it is rather confusing. Today we are not only discussing legal and Constitutional

Points, but I think an issue which the entire House cutting across political lines should address itself is that how this is being perceived by the people, by the citizens of the country in whose name we are conducting all our activities. That is the essence. Everyone of us here is sworn in by the Constitution. The Constitution is supposed to administer, to govern and to conduct the activities of the nation. Thus is a week's time from now, we will be observing the 50th anniversary of our Independence. We will be introspecting as to how we have gone about during these 50 years. Therefore, at this historical juncture, it has become very important for us to introspect ourselves. To make allegations and to make counter-allegations we may mention many arguments from the law books, but the point is whether our arguments or counter-arguments are convincing our fellow citizens who are sitting outside and who are watching us. That is the whole question.

Mr. Vice-Chairman, Sir, we think that the major phase of the contemporary politics today is there is a crisis of credibility in our political system. I am not blaming one party or the other, but unless we detach ourselves from the process and try to introspect and try to rectify ourselves. I think this may sound cynical. But we should not think that the parliamentary system in the country can be taken for granted. I agree with Mr. Som Pal that it is the greatest system. But frequent abuse and misuse may render it useless. Therefore, we should look at how we are using the Constitutional provisions that are provided. Mr. Vice-Chairman, Sir, I put this question. Why is it that parties like the Left who were supporting Mr. Yadav earlier in the days when he was being made to face the worst political criticism on the grounds of his stand on social justice and communalism, are forced to raise certain moral questions? I accept Mr. Ahluwalia's logic-unless he is finally proved guilty, it has to be accepted that

he is innocent. But, at the same time, the question of dignity of office is there. That his staying in power was untenable was proved by his own action. I want to put this question to those who are defending his action of staying in power, continuing in power, for the last two or three months, against the sentiments, against the wishes, of the generally democratic-minded people. Would not the office of Chief Minister of Bihar have been elevated in the eyes of the people and he resigned elevated in the eyes of the people had he resigned earlier? If charges are made on the floor of the House today about the CBI or the court, if they are valid, could not all these things be defended in the court? Will it not be defended in the court? That, he will have to continue and try to defend himself in the court, in legal proceedings. Then, why do we deny the office of Chief Minister the dignity that it deserves? This is the basic point. We want to cleanse the political process, we want to unite the people, we want to unite the nation on certain issues and we want to change the situation, that is the contention which is made by our friends. But the point is, charges are being made, not being able to defend him. What kind of signals are we sending to the people? We do not want any certificate from Satishji. It is him magnanimity that he has given such certificates. But our approach to this issue is entirely different. If we talk of not maintaining double-standards, then, I think the BJP does not really have the moral authority to talk about the Constitutional propriety. We have seen it. Assurances have been given in Parliament assurances have been given in court assurances have been given in the National Intergration Council, and they have been violated with impunity. If we share teal we do it in the fitness of parliamentary traditions, that has nothing to do with our political differences. But the point is whether all the parties will come together to address themselves to these issues. Then there is the question of corruption. The Constitution is being quoted. The law is being quoted. Now, it

is true that we are updating many laws that we are having.

SHRI SOM PAL: Sir, our hon. friend is referring to standards and double standards, both. They were demanding the resignation of Laloo prasad, and by this logic, they demanded the RJD to be kept out of the United Front openly. Now, the President of the JD has been formally charge-framed by the court. Would my friends not demand the JD being out of the United Front Government? Is it not double standards? That is what I want to know. (Interruptions)

SHRI R.K. KUMAR (Tamil Nadu) There are only two standards-double standard and sub-standards. (Intrenruptionr)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Dr. Biplab Dasgupta, Mr. Som Pal and his say because Mr. Nilotpal Basu Yielded to him.

SHIR NILOTPAL BASU: Sir, Som Pal would be knowing better that we have a democratic party and we conduct our business in a very transparent manner. Our attitude about the points made about the Janata Dal President is well-known. It has been published in all the major newspapers. You can go through the newspapers. I don't want to waste my time on that. Now, a question comes if the C.B.I., has done anything wrong (Interruptions)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATORVEDI): Mr. Nilotpal Basu, I want to see your face. But you always face Som Pal Ji.

SHRI NILOTPAL BASU: If the C.B.I., has committed a mistake, if the courts have done a mistake (Interruptions)

SHRI SATISH AGARWAL: You can refer to a question from a Member who belongs to some definite party. Mr. Som Pal, *de Jure*, you are J.D. *De facto*, you are R.J.D. L Now, please clarify to which party you belong.

*Discussion on*

SHRI SOM PAL: Sir, I am an aggrieved

person placing the issue before you for your indulgence.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): Let Nilotpal Basu wind up now. He has raised many issues.

SHRI NILOTPAL BASU: Now what do we gain from hearing about the issue of judicial activism, day in and day out? There are certain self-appointed crusaders against the Judiciary. Now, the point is, in the country, in the Parliamentary system of Democracy, we have three wings—the Executive, the Judiciary and the Legislature. Now, the point is, how have seen in this House how legitimate rights of legislation were curtailed. I will give one example. The Chair had given a direction to the former Petroleum Minister to give a list of those people who have been the beneficiaries of allotment of petrol pumps. It was not laid on the Table of the House. It was somehow mangled. But when the court directed the same Minister, within seven days, the same political Executive had gone to the court and produced the entire list. Time and again we have seen on a number of issues which should have been the legitimate and exclusive prerogative of the Executive to decide or the Legislature to discuss, the Executive or the Legislature have not addressed themselves to those issues. Now naturally, nothing can remain like that. The residual powers will be assumed by somebody. There may be elements of truth in the allegation that some transgression is there. The point is that the legislature, the political parties and the political process have to restore the credibility of the position which we are claiming, which we are taking, in the eyes of the people. My point is this. How did Mr. Seshan become a hero in the eyes of the people?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI. TRILOKI NATH CHATURVEDI): Now the point is that you come to the point of winding up. Your time is over. |

*in Bihar*

SHRI NILOTPAL BASU: So, our point is clear that while we do not disagree that the CBI's seeking military assistance was not correct, the overall situation that is developing in Bihar is no good. Who got elected whom is a Constitutional aspect. But the whole question comes up again. Certain political traditions were being opposed. Certain statements were made earlier, our dynastic rule all that. Out of the 136 or 137 people, we make a Ministry of 71 people. Is it a great commentary on the kind of political system that we are running in this country? What is the impression of the people in this country? What is the impression of the people in this country about all that? One has to ponder about it. This kind of a situation, we think, Mr. Vice-Chairman, is a very serious situation. Therefore, the Central Government should take note of it. We are not supporting the imposition of article 356 at this stage. But it the same time, we cannot support the open attacks on opponents, the attempt to stifle democratic opinion, the methods that are continuing in Bihar, the kind of violence that is taking place and some of the incidents that had taken place on the *bandh* day and all that. The Central Government has every responsibility to ensure the basic fundamental rights that are enshrined in the Constitution. Those should be available to the people. The people should be able to exercise those legitimate forms of protest. That kind of a situation has to be there. Otherwise, we cannot make any headway in this critical juncture of the history of the nation. I think the parties are not taking any position here. Nobody is saying that you go beyond the Constitutional provisions. The point is that some open kind of political inducements are being given. We can refer to the stand which was taken by the former Chief Minister on the earlier confidence motion. Some kind of inducements were given to the Jharkhand Mukti Morcha. What kind of political standards or political morality have we set? We have heard the Congress party members' speeches. On the one hand,

they say, "We don't want to support corruption. We don't support this." On the other hand, they allow the continuation of this kind of a political mockery. We don't accept that. Therefore<sup>^</sup> our position is very clear that the Central Government will have to be very watchful about the situation. So far as the point that the CBI contacting the military is concerned, we support that part of the statement. As far as the allegations, which are coming up that the State Government officials took a partisan stand in discharging the court orders and all that are concerned, those things will have to be gone into.. With these words I conclude my speech. Think you.

SHRI R.K. KUMAR Mr. Vice-Chairman, Sir, at the outset I would like to express my anguish over the loss of two whole days at the start of the session. We all assembled here on 23rd July. For two whole days there was total chaos in the House to discuss the chaos in Maharashtra and Bihar. Sir, an experienced Parliamentarian told me that after six years in Rajya Sabha you will become useless for anything. The reason is this. If we have to put a question, there is a lottery system. It can come in the first place, second place or third place. So far as Special Mentions are concerned, it depends upon the Chairman whether he gives permission or not. If we have to speak on a Bill, it depends upon our party's time and also how many Members want to speak. So we get very little time to express our view on various issues. So far as these two issues are concerned, we could have discussed them in a better manner. This issue was raised on 23rd July and we are discussing it on 5th August. In 14 days the situation has totally changed in Bihar.

Now I come to Bihar. Sir, the problem appears to be three fold. Firstly, lawlessness. Secondly, political chaos and thirdly, corruption. So far as law and order is concerned, with due respect, it has never been a plus point for Bihar.

Sir, I am talking from my personal experience. I used to go to Bihar once in fifteen days for three years as I was associated professionally with a big project of my friends and hon.

Colleague, Shri Shatrughan Sinha. मैं उनको द्रोणाचार्य मानता हूँ।

I have seen with my own eyes day light shooting. I was daily seeing some procession or the other in Patna bringing life to a halt.

So far as corruption is concerned, this is not a special phenomenon for Bihar, there has been corruption—I am not trying to justify corruption at any level—from times immemorial. Now we all talk of corruption at various levels because of the so called judicial activism.

Sir, I would like to bring to the notice of the House a very interesting case. It is reported in the 63rd Income-Tax Reports. It is a case of Coimbatore-Salem Bus Transport Co. which came up in the Madras High Court. This Company claimed as allowable deduction the Mamool paid to the traffic policeman. There was no voucher. Obviously, there will be no voucher. This expenditure was disallowed and the matter went to the High Court. The observation of the High court in this Case was: "The wheels of business do not move unless you grease the palm and more so in the bus business". The Court observe, "what is the relevance is the reasonableness of the expenditure and the nature of the business?" Corruption has been there for times immemorial. (*Interruptions*). I am not trying to justify corruption.

So far as Bihar is concerned, the major scam that is now being talked about all over India is the fodder scam. We all know about it. The officers of the Department of Animal Husbandry *prima facie* have withdrawn huge sums of money through bogus bills for alleged purchase of fodder for animals. Now what kind of involvement of political masters there was, we do not know. It is for the court to decide. Allegedly there has been some political support to these

corrupt officers. Whether these officers contributed a part of the loot to the political masters, we do not know. Assuming that a Minister or a Chief Minister—I am not trying to defend anybody—has given promotion to somebody or has stopped the transfer of somebody. It can be done under three circumstances. One, for a *Quid pro quo* by receiving a small or big portion of the loot. Two, due to negligence which is incompetence and three, due to misjudgement. We do not know in what category the case of the former Chief Minister of Bihar falls we do not know about it. It is for the court to decide. The question is—as Mr. Basu rightly stated—of 'the dignity of officer.' Why did he not resign when allegations were made? Why did he knock the doors of the Supreme Court? Bihar is stated to be the second most populous State. But what is happening in the first populous State? When one party loses power, another party comes to power and all the Opposition Members are branded as criminals. Some case or the other is foisted against them. When the present party which is in power goes and the other party comes to power, they will brand other Members as criminals. So, the branding of political opponents as criminals as corrupt has become the order of the day. Merely by filing a chargesheet nothing is established. An innocent person who is holding a public office, when an allegation is made, he will not have the confidence to go to court. Even if I am innocent, I hesitate to go before a court because I know judicial activism ends with the filing of the charge-sheet. Till then there is a lot of publicity. Take the average number of years taken to conclude a criminal case. Three to four officials of Punjab and Sind Bank were charged with corruption 14 years ago and they were acquitted three days back. For 14 years their lives were ruined.

Why does a public servant or a political leader or anybody else hesitate to go to court? They hesitate because they are not

sure that justice will be done to them in a short time-frame. There is enormous judicial delay. We talk of economic reforms, we talk of administrative reforms, but unless there is judicial reform, this will go on. I talk from personal knowledge. In Singapore, criminal cases, including all appeals, are concluded within nine months. A man is either acquitted or found guilty and sent to prison. In such a situation, an innocent man will definitely resign and say, "Okay, it is after all a question of nine months, I will face the court and come back." But that is not the case here. I think we should all concentrate on judicial reforms. At least, in criminal cases, justice should be meted out quickly. As regards the system of reporting judicial cases, earlier, newspapers used to have reporters in the court. These people reported whenever a case came up before the court or when some proceedings took place. Now we have a very strange phenomenon. The Enforcement Directorate, the CBI and other investigating agencies have a full-fledged publicity department. Is it their job to give publicity to whatever they are investigating into? Why should there be publicity? What have we achieved by doing all this? The former Chief Minister was sought to be arrested. It was said that if he was not arrested, he could tamper with the evidence or he could influence the witnesses or he could abscond. The question of absconding does not arise here. But as regards tampering of evidence or influencing the witnesses, what have you achieved? He has made his wife the Chief Minister. She has been elected Chief Minister by the elected MLAs. But unless he wanted it, no MLA would have elected her as the Chief Minister. By doing all this we have pushed him to a corner. Till now he was accountable not only for his past actions but also for his present actions. By pushing him to a corner, we have given him powers without responsibility and this was not intended. As regards seeking Army help, there were some reports in the newspapers and hon. Member, shri

Som Pal, referred to them. I have gone through them. The Joint Director says, "We have done nothing. It is the court which gave the orders." That is very strange. It was not the High court Judge who went to the CBI at 5 AM. It was the other way round. It was the CBI official who went to the High Court judge and took a verbal order seeking military help. This needs to be clarified by the Home Minister. In conclusion, I would like to say that we should go in for judicial reforms and see that justice is meted out quickly so that innocent people have the confidence to face the court and get acquitted.

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** श्री जलालुदीन अंसारी। श्री असारी साहब अभी नहीं है। श्री जनार्दन यादव आप बोलिये। आपका टाइम सिर्फ़ पांच मिनट का है।

**श्री जनार्दन यादव :** माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से बिहार में जो भ्रष्टाचार बढ़ा है उसी की ओर सरकार और इस सदन के सदस्यों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। माननीय सतीश जी ने बिहार के अतीत के बारे में चर्चा की है। माननीय अहलुवालिया साहब ने भी समर्थन किया है कि बिहार का अतीत बहुत उज्ज्वल रहा है लेकिन बिहार का वर्तमाना बहुत अंधकारपूर्ण है। जिस बिहार में राजेन्द्र बाबू पैदा हुये उस बिहार ने नटवर लाल भी पैदा हुआ, यह सबको मालूम नहीं है। नटवर लाल दुनिया का एक मशहूर ठग है और उसका भी जन्म छपरा में हुआ जहां राजेन्द्र बाबू का जन्म हुआ था और पूर्व मुख्य मंत्री के बारे में नैतिकता का सवाल लोगों ने बहुत जोरों से उठाया कि नैतिकता के आधार पर उनको त्याग-पत्र दे देना चाहिये लेकिन पूर्व मुख्य मंत्री से नैतिकता के बारे में चर्चा करना यह अन्याय है। मुझे याद है कि 10 मार्च, 1990 को जब लालू यादव जी ने बिहार के मुख्य मंत्री पद की शपथ जय प्रकाश जी की मूर्ति के सामने ग्रहण की तो उन्होंने कहा था कि एक पैसा घूस लेना मेरे लिये गाय के खून के बराबर होगा। जो मुख्य मंत्री जी.पी. की मूर्ति के सामने शपथ लेता है, जो व्यक्ति जे.पी. भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन में से उभरकर नेता बनता है और जब वह मुख्य मंत्री बन जाता है तो भ्रष्टाचार के सारे रिकार्ड तोड़ देता है, उससे नैतिकता की बात करना समय की बर्बादी है। जब उनके खिलाफ चार्जशीट दायर हो गई तो उन्होंने

कहा कि हम जेल में रहकर के शासन करेंगे। सचमुच में जो उन्होंने कहा आज वह हो रहा है वह जेल में बैठकर आज बिहार का शासन चला रहे हैं। उन्होंने जो कहा है वह किया है। वर्ष 1994 में विधान सभा के अंदर जब विधायकों ने यह प्रश्न उठाया था कि बिहार में भ्रष्टाचार जोरों से बढ़ रहा है, कांग्रेस के विधायक ने कहा था जो आज इस सदन के सदस्य हैं तो लालू जी ने वहां पर कहा था जितना आप लूटे हैं, उतना ही लूटकर ही बद्द कर रहे। बिहार में भ्रष्टाचार की जाननी तो कांग्रेस ही है। कांग्रेस ही बिहार में भ्रष्टाचार लाई है, यह सारा घोटाला लाई है। 1990 में जब लालू यादव मुख्य मंत्री बने और राम जीवन सिंह कृषि मंत्री बने और उस समय पशु-पालन विभाग की फाइलें उनके सामने प्रस्तुत हुई थीं तो उस समय 30 करोड़ का घोटाला था और उस समय मुख्य मंत्री कांग्रेस के माननीय जगन्नाथ जी थे। इसलिए बिहार में भ्रष्टाचार कोई सत्ता वर्षों में नहीं आया है। भ्रष्टाचार की सङ्क कांग्रेस के द्वारा बनी थी। अन्य राज्यों में तो विकास करने के लिये इनफ्रास्ट्रक्चर बनता है लेकिन बिहार में इनफ्रास्ट्रक्चर पर लालू जी दोड़ गये। कहीं तो आबंटन से 10 प्रतिशत, 20 प्रतिशत लिया जाता था लेकिन लालू यादन के समय में आबंटन में से ढाई सौ गुना ज्यादा निकाला गया।

और पैसा निकालकर पशुपालकों के लिये, पशुओं के लिये, चारे अगर खर्च किया जाता तो मैं सहमत था। पैसा निकाला गया चारा खरीदने के लिये, चारा खरीद नहीं गया। ...**(व्यवधान)**... पैसा निकाला गया दवा के लिये ...**(व्यवधान)**... खरीदी ही नहीं गई ...**(व्यवधान)**...

**श्री नरेश यादव (बिहार) :** उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या आज की चर्चा का विषय फोड़र स्कैम है क्या?

**श्री जनार्दन यादव :** जी, फोड़र स्कैम है, भ्रष्टाचार और फोड़र स्कैम ...**(व्यवधान)**...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** यह मामला तो कोर्ट में है। मैंने उनको कह दिया है। बैठ जाइए।

**श्री जनार्दन यादव :** उपसभाध्यक्ष जी, जो ढाई सौ गुना आबंटन से अधिक निकाला गया यह किसके लिये निकाला गया? अभी हमारे वामपंथी सांसद बोल रहे थे ...**(व्यवधान)**...

**एक माननीय सदस्य :** मामला न्यायालय में गया है। ...**(व्यवधान)**...

**श्री जनार्दन यादव :** सोशल जस्टिस को आगे बढ़ाना चाहते हैं ... (व्यवधान) ...

**श्री नरेश यादव :** यह मामला तो न्यायालय में पेंडिंग है।

**श्री जनार्दन यादव :** यह सोशल जस्टिस है कि समाज में जो कमज़ोर है, दलित है उसको न्याय मिलना चाहिए। लेकिन यह पशु चारा, यह दवा किन वर्गों के लिये आई थी? यह उन्हीं वर्गों के लिये बिहार में आई थी जो मवेशी पालते हैं, जो पिछड़े वर्ग के हैं, सूअर पालते हैं। अहलुवालिया जी ने मुसाहर का नाम लिया है। हमारे यहां बिहार में मुसाहर जाति होती है, उनके बच्चों को सातन कराने का, बाल कटाने का, साबुन लाने का, शैम्पू लगाने का, काम करती है लेकिन उस बिहार में दो वर्ग हैं, दो ही जातियां हैं जो सुअर का पालन करती हैं- एक मुसाहर करती है दूसरे मेहतर करते हैं और आदिवासी करते हैं। ये सब सामाजिक न्याय के अंदर आते हैं। दलित और ओवीसी और ये पशु उनके आर्थिक उत्थान के लिये थे। लालू यादव ने सामाजिक न्याय के नाम पर घोट तो ले लिये लेकिन घोट लेने के बाद सामाजिक न्याय के अंदर आने वाले जो दलित, शेषित, पीड़ित हैं, उन्हीं का हिस्सा खाया। दुनिया में किसी भी लोकतंत्र में या किसी भी राजतंत्र में ऐसा नहीं हुआ होगा कि जो जनता की गाढ़ी कमाई का रखवाला है, जो खजाने का मालिक है वह स्वयं खजाना लूट ले। किसी भी लोकतंत्र में आपने यह देखा नहीं होगा.....

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** समाप्त करिये।

**श्री जनार्दन यादव :** बिहार में भ्रष्टाचार करने वाले लोग सीना तानकर चल रहे हैं, इसका क्या कारण है? कारण यह है कि केन्द्र में बैठी हुई सरकार उन भ्रष्टाचारियों को बचाने में मदद कर रही है। कल माननीय देवेंद्रजौड़ा जी का स्टेटमेंट मेंने पढ़ा कि बिहार में जगंत राज है, बिहार की सरकार को समाप्त कर देना चाहिए। इसी सदन में बिहार की कानून व्यवस्था के बारे में अनेक बार चर्चा हुई जिस समय माननीय देवेंद्रजौड़ा जी प्रधान मंत्री थे उसी समय बिहार में एक आदिवासी लड़की के साथ बलात्कार हुआ। बलात्कार करने वाला कोई साधारण आदमी नहीं था। उस लड़की का नाम दीपा मुरमुर था, जिला जमुही जिले के अन्य अधिकारी ने बलात्कार किया।

**एक माननीय सदस्य :** राजस्थान में क्या हुआ ... (व्यवधान) ...

**श्री जनार्दन यादव :** उन्हीं के राज में भूखली देवी समस्तीपुर की जो कि हरिजन महिला थी उसको नंगा करके घुमाया गया। उसी बिहार में पलामू जिले में निशा खातून, मां-बेटी दोनों का एक साथ बलात्कार किया गया। क्या बिहार में राष्ट्रपति शासन लागू करने का यह ग्राउन्ड नहीं हो सकता? सत्ता वर्षों के अंदर बिहार में 35 हजार लोगों की हत्या हुई। क्या बिहार में राष्ट्रपति शासन लागू करने के लिये आधार नहीं बन सकता? बिहार में आर्थिक दिवालियापन है। बिहार में कर्मचारी से ले कर ऊपर के लोगों को दरगाह नहीं मिलता है। सात वर्षों में विकास का कोई काम नहीं हुआ। बिहार में आर्थिक दिवालियापन, कांस्टीट्यूशन ब्रेकडाउन, लॉ एंड आर्डर ब्रेकडाउन, तब भी धारा 356 लागू करने का समय ही नहीं आया है। यह कब समय आएगा? आज की जो सरकार बनी है, इसके बारे में मुझे बहुत चर्चा नहीं करनी है क्योंकि पांच-सात दिन की सरकार है लेकिन यह धारा 356 और धारा 360 लागू करने का पहले समय था, क्यों नहीं लागू किया गया? गुजरात जी प्रधानमंत्री हैं। बिहार के राज्य सभा के सांसद हैं।

**श्री नरेश यादव :** बिल्कुल गलत बात है। ... (व्यवधान) ...

**श्री जनार्दन यादव :** पटना से यह अमृत वर्ष अखबार है। इसमें छपा है।\*

यह संभव ही नहीं है। ... (व्यवधान) ...  
महाभारत के समय में भी ... (व्यवधान) ...

**श्री नरेश यादव :** प्लाइट आफ आर्डर (व्यवधान) ... यह गलत बात है। ... (व्यवधान) ...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): You cannot make allegations against the Prime Minister or any other Minister without notice. (Interruptions)

**नागर विमानन मंत्री (श्री सी. एम. इब्राहीम) :** देश के उपप्रधानमंत्री पर जो अरोप लगा रहे हैं, nothing should go on record.

THE VICE/CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): You should have sought the permission of the

\*Expunged as ordered by the Chair.

Chair earlier. You cannot make these allegations. (*Interruptions*) All references to the Prime Minister should be deleted. (*Interruptions*)

**श्री जनर्दन यादव :** जांच करा लीजिये ...(**व्यवधान**)... अखबार में निकला है, जांच करवा लीजिये ...(**व्यवधान**)...

**श्री सी. एम. इब्राहीम :** नोटिस दीजिए ...(**व्यवधान**)... किसी अखबार ने छाप दिया और आपने कह दिया ...(**व्यवधान**)...

**SHRI SURINDER KUMAR SINGLA:** It should be deleted, Sir. It should not go on record. (*Interruptions*)

**THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI):** I have already said that. It will be deleted. (*Interruptions*) Yadavji, Singhaji, please sit down. (*Interruptions*) All allegations made against the Prime Minister stand deleted. एक मिनट में आप समाप्त कीजिए।

**श्री जनर्दन यादव :** इसलिए उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन और सरकार को बताना चाहता हूं कि लालू यादव जी सरेंडर कर के जेल चले गये। इसी देश में सुश्री जय ललिता भी मुख्य मंत्री थी। पिछले साल उनको गिरफ्तार किया गया था और सेंट्रल जेल में रखा गया था बिना चादर और बिना कम्बल के। क्या उनके लिए अलग जेल नहीं बनाई जा सकती थी? लालू यादव को अलग जेल में रखना इस पश्च पालन घोटाले का जा जेल चल रहा है, उसकी गवाही को टैंपर करना है। ...(**व्यवधान**)...

**श्री ईश दत्त यादव : (उत्तर प्रदेश) :** आडवाणी जी को कहां रखा गया था? ...(**व्यवधान**)...

**उपसभापति (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** ईश दत्त जी आप बैठ जाइये।

**श्री जनर्दन यादव :** आपके भी नेता पर चार्जशीट हैं जो केन्द्र में मंत्री हैं ...(**व्यवधान**)...

**THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI):** It is not Yadav versus Yadav. (*Interruptions*)

**श्री रामदास अग्रवाल :** आडवाणीजी और लालू प्रसाद यादव को एक श्रेणी में नहीं रख सकते हैं ...(**व्यवधान**)...

in Bihar

**श्री जनर्दन यादव :** मीडिया आग्रह करता रहा कि बिहार के मुख्य मंत्री को त्याग पत्र दे देना चाहिये लेकिन नहीं किया। ...(**व्यवधान**)...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** जनर्दन यादव जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

**श्री जनर्दन यादव :** उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से एक बात कहना चाहता हूं कि बिहार में जो वर्तमान सरकार बनी है, गृह मंत्री जी उसकी लिस्ट मंगा ले उसमें 7 ऐसे मंत्री बने हैं जिस पर एक केस नहीं, दो केस नहीं, तीन केस नहीं, चार केस नहीं, दर्जनों केस हैं मर्डर का, हत्या का, रॉबरी का डकैती का और बलात्कार का। बिहार सरकार को बर्खास्त करने के लिए क्या यह आधार नहीं बन सकता? ...(**व्यवधान**)...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** आप समाप्त कीजिये। ...(**व्यवधान**)...

**श्री जनर्दन यादव :** पूरी बात होने पर फिर आप बोलिएगा। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से अंतिम बात कहना चाहता हूं कि पशुपालन घोटाले में लालू यादव जी के साथ-साथ कांग्रेस के पूर्व मुख्य मंत्री हैं और मैं सी.बी.आई. को भगवान नहीं मानता ...(**व्यवधान**)...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** अब आप समाप्त करिए।

**श्री जनर्दन यादव :** जगन्नाथ जी का बेल जब हाई कोर्ट ने दे दिया तो उसके खिलाफ सी.बी.आई. को सुप्रीम कोर्ट में केसलेशन के लिए जाना चाहिए था। नहीं गया। इसलिए बिहार के आम लोगों की शंका सी.बी.आई. के ऊपर जाती है, इसका भी जवाब मुझे चाहिये। धन्यवाद।

**श्री जलालुदीन असांरी (बिहार) :** उपसभाध्यक्ष महोदय, बिहार की यह जो अभी मौजूदा स्थिति है उस पर चर्चा हो रही है। मैं समझता हूं कि यह चर्चा पहले होनी चाहिए थी लेकिन बढ़ाते-बढ़ाते आज इसका शुभ दिन आया है। मेरी समझ है कि लालू प्रसाद जी के आत्म समर्पण करने और उनके न्यायिक हिरासत में चले जाने से बिहार में जो व्याप्त स्थिति है वह समाप्त हो गई है मैं ऐसा नहीं मानता। लालू प्रसाद जी की गिरफ्तारी न वहां की राज्य सरकार ने की और न केन्द्र सरकार के निर्देश पर हुई। यह सर्वविदित है और सभी जानते हैं कि कोर्ट के जरिए सी.बी.आई. को यह इन्वायरी दी गई और पटना हाई कोर्ट से ले करके सुप्रीम कोर्ट के सारे प्रक्रिया के बाद लालू प्रसाद जी आज न्यायिक हिरासत

में हैं। मैं चारा घोटाले की चर्चा करना नहीं चाहता, वह कोर्ट का मामला है। कोर्ट उस पर निर्णय लेगी। तथ्यों के आधार पर जो भी निर्णय करना होगा वह कोर्ट को करना चाहिए। लेकिन दुख की बात यह है कि हम तमाम राजनीति करने वाले राजनीतिक पार्टी के नेताओं के लिए कि एक प्रदेश के मुख्य मंत्री को जेल जाना पड़े यह हिन्दुस्तान के संसदीय जनतंत्र के 50 साल के इतिहास में किसी के लिए खुशी की बात नहीं हो सकती है बल्कि यह बहुत ही दुखद और गंभीर बात है और लोग कहने लगे हैं, उपसभाध्यक्ष महोदय, जो हम राजनीति कर हरे हैं, आम जनता हम लोगों के बारे में क्या कहती हैं? द्रेन में, आम जगहों पर कि यह राजनीति करने वाले चौर हैं। इससे शर्मनाक बात हम लोगों के लिए जो राजनीतिक कार्यकार्ता और नेता अपने हैं उनके लिए इससे दुखद बात और कोई नहीं हो सकती है और अपने देश का संसदीय जनतंत्र का इतिहास सिर्फ 50 साल का है जो हम स्वर्ण जयन्ती मनाने जा रहे हैं। विषय यह नहीं है कि लालू प्रसाद जी और लालू प्रसाद जी के परिवार से हमको कोई दुश्मनी है या कोई झगड़ा है। कतई नहीं। मैं भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि पांच साल तक उनकी सरकार का हम लोगों ने बेशर्त समर्थन किया था इसलिए कि उन्होंने कहा था कि बिहार के अंदर पिछड़ों को, दलितों को, अल्पसंख्यकों को सामाजिक न्याय देंगे, संप्रदायिक सदभाव कायम रखेंगे और संप्रदायवाद के खिलाफ लड़ेंगे। लेकिन क्या हुआ? एक के बाद एक घोटाला, चारा घोटाला, दवा घोटाला, जमीन घोटाला और मैं कहना चाहता हूं कि बिहार के अंदर सरकार के जितने भी विभाग है, वह आवंटित राशि से एक्ससेस निकासी करते हैं। बिहार की यह स्थिति है और स्थिति यहां तक है कि यूनिवर्सिटी, कालेजों के प्रोफेसर्स को, अध्यापकों को, कर्मचारियों को तीन-तीन महीने से लेकर छह छह महीने तक वेतन का भुगतान नहीं होता है। इसके अलावा जितने भी कारपोरेशन हैं, नगर निगम है, जहां सबसे अधिक दलित काम करते हैं, सफाई कर्मचारी, उनको 9 महीना, 10 महीना से लेकर 26 महीना तक का दरमाह तनखा नहीं दिया जाता। यह है बिहार की स्थिति।

महोदय, मैं सदन के माध्यम से, आपके माध्यम से केन्द्र सरकार और पूरे देश की जनता को बताना चाहता हूं कि बिहार की स्थिति क्या है बिहार की स्थिति यह नहीं है कि लालू जी को जेल में बढ़ कर दिया गया और वहां की स्थिति खत्म हो गई। रावड़ी जी से भी हमारा कुछ लेना-देना नहीं है, कोई झगड़ा नहीं है। महिला बनी हैं

मुख्यमंत्री, खुशी की बात है। हम लोग तो महिला के 33 प्रतिशत आरक्षण के लिए रोज हल्ला कर रहे हैं, लेकिन केन्द्र सरकार बिल ही नहीं लाती है। आज कुछ लोग महिला के बड़े प्रशंसक बने हुए हैं, लेकिन अंदर से प्रशंसा नहीं है, जुबां से प्रशंसा करते हैं। रावड़ी जी मुख्यमंत्री बनी, लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूं, आप लोग भी जानते हैं, कि उन्हें बहुमत कैसे प्राप्त हुआ उनकी संख्या भी आपको मालूम है निर्दलीय को मिलाकर और एक झारखंड मुक्ति मोर्चा सोरेन गुट हैं, जो पूरे देश में और विश्व में ख्याति हासिल कर चुका है कि दिल्ली में जब पूर्व प्रधानमंत्री नरसिंह राव जी की सरकारको बचाना था तो कैसे बचाया उन्होंने। उनके कारनामे उजागर हैं पूरे देश में।

महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूं कि एक अलग झारखंड राज्य की मांग हमारी पार्टी वर्षों से कर रही थीं, लेकिन जब अलग राज्य की बात आती थी तो श्री लालू प्रसाद यादव कहते थे कि झारखंड राज्य की स्थापना उनकी लाश पर होगी। क्या वह बात असत्य है? सच्चाई है यह नहीं अब जब उनको अपनी सरकार बचाने का हुआ तो उन्होंने विधानसभा में अलग झारखंड राज्य का प्रस्ताव पास करा दिया और क्या किया, कि जो कमेटी बनाई गई थी, झारखंड क्षेत्रीय समिति, उसका वह चुनाव नहीं करा सके, लेकिन उसके अध्यक्ष और उपाध्यक्ष, सूरज मंडल उपाध्यक्ष हैं और अध्यक्ष हैं शिल्प सोरेन, उनको मुख्यमंत्री का दर्जा या उप-मुख्यमंत्री का दर्जा और सूरज मंडल को कैबिनेट मिनिस्टर का दर्जा दे दिया। इसको आप क्या कहेंगे? यह राजनीतिक भ्रष्टाचार नहीं है तो क्या है? यह पोलिटिकल करप्शन हैं, सौ फीसदी राजनीतिक भ्रष्टाचार। भ्रष्टाचार सिर्फ आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं होता, राजनीतिक भ्रष्टाचार भी अपने देश में चल रहा है। यह मैं आपको भरे हुए दिल से कहना चाहता हूं। ...**(व्यवधान)**...

आपकी पार्टी ने समर्थन नहीं किया, हम लोग उसके लिए लड़ रहे थे। उन्होंने यह भी कहा था कि 4 करोड़ उत्तर बिहार और मध्य बिहार की जनता के खिलाफ लड़ेगी। मैं सर्वदलीय बैठक में था उस समय। मैंने कहा था कि आप मुख्यमंत्री की कुर्सी पर है, इससे हटकर कुछ इस तरह की बात करें और जब आप सर्वदलीय बैठक बुलाए हैं तो आम सहमति बनाने के लिए बुलाई थी। एक दिन पहले ही इस तरह का बयान क्यों दिया? इसलिए मैं उसमें नहीं जाना चाहता। यह स्थिति है बिहार राज्य की। वहां निधि और व्यवस्था नाम की कोई चीज नहीं है। गृहमंत्री जी भी जानते हैं, केन्द्र सरकार भी जानती हैं,

लेकिन इनकी मजबूरी हैं कुछ कर नहीं सकते। मैं इनकी मजबूरी से हमदर्दी रखती हूँ। और भी उस मजदूरी को जानता हूँ...*(व्यवधान)*...

**श्री विष्णु कान्त शास्त्री** (उत्तर प्रदेश) : मजबूरी बता दीजिए न।

**उपसभाध्यक्ष** (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) : वह गृह मंत्री जी खुद बता देंगे, अंसारी जी, आप अपनी बात कहिए।

**श्री रामदास अग्रवाल** : देश आपका कृतज्ञ होगा, यदि आप वह मजबूरी बता दें।

**उपसभाध्यक्ष** (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) : अंसारी जी को अपनी बात कहने दीजिए।

**श्री जलालुदीन अंसारी** : बिहार मे विधि-व्यवस्था नाम की चीज नहीं है और पिछले सात साल में बिहार के अदंर, मैं माननीय गृह मंत्री जी से कहूँगा कि पिछले सात साल के राज्य मे बिहार में कितने दलितों की हत्या हुई, कितने पिछड़ों की हत्या हुई, कितने नरसंहार हुए जिसमें पिछड़े और दलित मारे गए, इसकी भी सूची आप सदन को दें, तब पता चलेगा कि बिहार में पिछड़ों का राज चला रहे थे, उनको सामाजिक न्याय दे रहे थे या क्या कर रहे थे ? हमारे कांग्रेस के भाई कहते हैं कि भ्रष्टाचार से ज्यादा खतरनाक सम्प्रदायवाद है और सम्प्रदायवाद से लड़ना जरूरी है।

**श्री सुरिन्द्र कुमार सिंगला** : दोनों को खतरनाक कहा है हमने।

**श्री जलालुदीन अंसारी** : आप सम्प्रदायवाद से नहीं लड़ सकते। लड़ने की आपकी जो प्रतिबद्धता थी, वह समाप्त हो गई है और हिन्दुस्तान की जनता ...*(व्यवधान)*...

**श्री सुरिन्द्र कुमार सिंगला** : आपको तभी बैठाया है राज करने के लिए क्योंकि हम लड़ना चाहते हैं।

**उपसभाध्यक्ष** (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) : सिंगला जी, बैठ जाइए। आपकी तरफ से मीणा जी बोलेंगे।

**श्री जलालुदीन अंसारी** : 1989 के भागलपुर के दंगे के बक्त आपकी सरकार थी ...*(व्यवधान)*...

**उपसभाध्यक्ष** (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) : हंसारी जी, आप चेयर को ऐडरेस करिए और समाप्त करिए।

**श्री जलालुदीन अंसारी** : जब 1989 में भागलपुर में वहां दंगे हुए तो उस समय आपकी सरकार वहां थी और पूर्व प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी गए थे और दो करोड़ रुपए देकर आए थे उस दंगा पीड़ितों के पुनर्वास के लिए और सहायता के लिए। आपकी सरकार ने कितना रुपया खर्च किया और जो बचा तो लालू प्रसाद ने भी उनकी मदद नहीं की और मेरी जानकारी में 195 ऐसे मामले हैं जिनको आज तक न मुआवजा दिया गया और जो घर-बार छोड़कर बेदखल हो गए, उनका पुनर्वास भी नहीं किया गया आपका सम्प्रदायवाद से लड़ने का यहीं तरीका है? इसका दूसरा उदाहरण है, 6 दिसंबर, 1992 का ...*(व्यवधान)*...

**उपसभाध्यक्ष** (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) : अभी बिहार पर चर्चा चल रही है, आप उसी पर रहे।

**श्री जलालुदीन अंसारी** : उदाहरण दे रहा हूँ सम्प्रदायवाद के खिलाफ इनके लड़ने का। आपके तत्कालीन प्रधान मंत्री दिल्ली में बैठे रहे और मस्जिद को तोड़ दिया गया। यहीं आपका सम्प्रदायवाद से लड़ने का तरीका है? आपके सब तरीके हिन्दुस्तान की जनता जानती है। जो भ्रष्टाचार से नहीं लडेगा वह सम्प्रदायवाद से भी नहीं लडेगा। मैं आपको कहना चाहता हूँ, कांग्रेस के मित्रों से कहना चाहता हूँ। ...*(व्यवधान)*...

**उपसभाध्यक्ष** (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) : अब आप समाप्त कीजिए 3 मिनट की जगह 6 मिनट से भी ज्यादा का समय हो चुका है।

**श्री जलालुदीन असारी** : मैं केन्द्र सरकार से यह नहीं कहता कि बिहार में दफा 356 लागू कीजिए लेकिन मेरा कहना यह है कि बिहार में आर्थिक अराजकता है, शैक्षणिक अराजकता है, कानून और व्यवस्था नहीं है, तो संविधान की धारा 360 के तहत आर्थिक आपातकाल के तहत वहां आप कुछ नियंत्रण का सकते हैं या नहीं, मैं गृह मंत्री जी से और केन्द्र सरकार से यह जानना चाहता हूँ?

अंतिम बात मैं यह कहना चाहता हूँ कि सी.बी.आई. के लोग कोई दूध के धुले नहीं हैं। जनसत्ता में और दूसरे अखबारों में रोज उनके अधिकारियों की गङ्गबड़ी के मामले छपते रहते हैं, लेकिन वे आर्मी किस स्थिति में बुला रहे थे, उनका बुलाना गलत था या नहीं था। मैं उनका पक्ष नहीं ले रहा हूँ, आप इस बारे में जो उचित कार्रवाई कर सकें करें। साथ-साथ बिहार के जितने भी टॉप ऑफिशियल्स हैं - एस.पी., कलक्टर, मुख्य-सचिव जितने भी ये बड़े-बड़े पदाधिकारी हैं पुलिस और प्रशासन

के, वे अभी तक लालू प्रसाद यादव की बात मानते हैं चाहे वे जुडिशियल रिमांड में रह रहे हो यह भी सच है कि जिस दिन सी.बी.आई. के लोग रात में उनको खोज रहे थे, आपने समाचारपत्रों में पढ़ा होगा कि उस दिन मुख्यमंत्री आवास में 2 बैठकें हुईं। एक तो राबड़ी देवी ने बुलाई थी और रात में दूसरी मीटिंग लालू प्रसाद यादव ने बुलाई थी। अगर सारे समाचार गलत हैं तो मुझे कुछ नहीं कहना है।

महोदय, जिन अधिकारियों ने सी.बी.आई. को वारंट ऐक्जीक्यूट करने में सहयोग नहीं किया, उनके फिलाफ आप कार्यवाही कीजिए, उनको दंडित कीजिए। हमारे मित्र श्री अहलुवालिया जी आजकल लालू जी के बड़े ही मददगार हो रहे हैं, कल तक तो वे खिलाफ बोलते थे। मालूम नहीं ऐसा क्यों हो रहा है? कुछ कारण जरूर है। खैर, उन करणों को आप और हम सब एक दिन देख लेंगे। वे कहते हैं कि जनहित याचिका को खत्म कर देना चाहिये। अरे, यहीं तो एक रास्ता बचा है इन मदान्ध भ्रष्टाचारियों के खिलाफ। जनहित के प्रश्नों पर हाई कोर्ट और सुप्रीम-कोर्ट में जाकर इस तरह के कारनामों के खिलाफ कार्यवाही हो रही है। इसलिए मैं गृह मंत्री जी से कहना चाहूँगा कि पी.आई.एल. जो हैं, इस पर कोई अंकुश लगाने की बात मत कीजिए। अगर कोई गलत शिकायत करता है, तंग करता है तो कोर्ट उसको देखेगी। किसी को बदनाम करने के लिए, परेशान करने के लिए आनाचश्यक रूप से कोर्ट में केस किया जाता है तो कोर्ट उसको देखेगी।

महोदय, मैं जुडिशियल ऐक्टीविज्म के पक्ष में नहीं हूँ लेकिन जहां पर कार्यपालिका विफल हो जाए वहां न्यायपालिका की सक्रियता बढ़ेगी या नहीं? यह तो ऑटोमेटिक है। आज कार्यपालिका अपने दायित्व को नहीं निभा रही है। उसका परिणाम यह है कि कभी-कभी हमें जुडिशियरी में ऐक्टीविज्म बढ़ा हुआ दिखाई देता है।

महोदय, वैसे मैं हिन्दुस्तानी हूँ और पूरे देश की बात करता हूँ लेकिन बिहार में जन्म लेने के नाते मैं कहना चाहता हूँ कि बिहार आज कहां पहुंच गया है? महोदय, 15 अगस्त, 1947 को जब हमारा देश आजाद हुआ था, तब बिहार हिन्दुस्तान का चौथा पिछड़ा हुआ राज्य था और आज हम आजादी की 50वीं जयंती मनाने जा रहे हैं। आज सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक बिहार हमारे देश का 14वां पिछड़ा हुआ राज्य है। बिहार की तस्वीर और लोग कहते हैं कि बिहार पर चाचार करने की जरूरत नहीं है। जरूरत है इसलिए कि पूरे देश की 10 प्रतिशत आबादी बिहार में निवास करती है। यह एक बड़ा प्रदेश है। वहां की जनता की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक

अवस्था बहुत ही दयनीय हैं। बिहार आज बेरोजगारी में सबसे आगे हैं, अशिक्षा में सबसे आगे हैं, गरीबी में सबसे आगे हैं। आप कहते हैं कि बिहार में स्थिति ठीक है, कुछ गडबड नहीं है। आप जनता के कस्टोडियन हैं... (व्यवधान)...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :**  
अब आप समाप्त करें।

**श्री जलालुदीन अंसारी :** वहां कोई घोटाला नहीं हुआ बल्कि मैं कहता हूँ कि वहां खजाने की लूट हुई है और खजाने की लूट बदं होनी चाहिए, सरकार से यह निवेदन करते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

**أُشْرِي جَلَالُ الدِّينِ اَنْصَارِي "بِهَار":** اپ سہا  
ادھیک्षش مہودے۔ بِهَار کی یہ جو ابھی موجودہ  
استئمپی بے اس پر چرچ ہو رہی بے۔ میں  
سمجھتا ہوں کہ چرچ پہلے ہونی چاہئے تھی۔ لیکن  
بڑھاتے بڑھاتے آج اسکا شبہ دن آج آیا بے۔ میری  
سمجھہ بے کہ لا لو پرساد جی کے آتم سمرپن کرنے اور  
انکے نیایک حراست میں چلے جانے سے بِهَار میں جو  
ویاپت استئمپی بے وہ سماپت ہو گئی بے۔ میں ایسا  
نہیں مانتا۔ لا لو پرساد جی کی گرفتاری نہ وباں کی راجیہ  
سرکار نے کی اور نہ کینڈر سرکار کے نریدش پر یوئی۔ یہ  
سرورویت" ہے اور سبھی جانتے ہیں کہ کورٹ کے  
ذریعہ سی۔بی۔آئی۔ کو یہ انکو ائری دی گئی اور پنہ بائی  
کورٹ سے لیکر کے سبیم کورٹ کے سارے پرکریہ  
کے بعد لا لو پرساد جی آج نیایک حراست میں ہیں۔

میں

چارہ گھوٹا لے کی چرچ نہیں کرنا چاہتا وہ کورٹ کا معاملہ  
بے۔ کورٹ اس پروفیصلے لے گئی تمہیوں کے آدھار پر جو بھی  
فیصلہ کرنا ہوگا وہ کورٹ کو کرنے چاہئے لیکن دکھ کی بات یہ  
بے کہم تمام راج نیت کرنے والے تمام راجنیتک پارٹی کے  
نیتاوں کے لئے کایک پر دیش کا مکھیہ متمنی۔ ۱ سے جیل جانا  
پڑے۔ یہ هندوستان کے سنندیہ جن تنتر کے ۵۰ سال کے  
اتیہاس میں کسی کے لئے خوشی کی بات نہیں ہو سکتی ہے۔  
بلکہ یہ ہست بی دکھ اور گمبیر بات ہے۔ اور لوگ کہنے لگے  
ہیں۔ اپ سبھا ادھیکش مہودے جو بم راج نیت کر رہے ہیں  
عام جنتا بم لوگوں کے بارے میں کیا کہتی ہے۔ ٹرین میں۔  
بس میں۔ عام جگہوں پر کیدی راج نیت کرنے والے چور ہیں۔  
اس سے شرمناک بات بم لوگوں کیلئے جو راج نیت کاریہ کرنا  
اور نیتا اپنے بیں ائک لئے اس سے دکھ کی بات اور کوئی نہیں ہو  
سکتی ہے۔ اور اپنے دیش کا سنندیہ جن تنتر کا اتیہاس صرف  
۵۰ سال کا ہے جو بم "سورن جینتی" منانے جا رہے ہیں۔  
و شے یہ نہیں ہے کہ لا لو پر سادجی اور پر سادجی کے پریوار  
سے پمکوئی دشمنی ہے یا کوئی جہگرا ہے قطعی نہیں  
ہے۔ میں چہارتیہ کمیونسٹ پارٹی کی طرف سے یہ واضح کر  
دینا چاہتا ہوں

کہ ۵ سال تک انکی سرکار کا ہم لوگوں نے بے شک سمرتھن کیا تھا  
اسلنے کے انہوں نے کہا تھا کہ ہمارے اندر پچھڑوں کو دلتون کو  
الپ سنکھیکوں کو ساما جیک نیائے دینے سامپر دائک سدھماو  
قائم رکھیں گے اور سمپر دایکواد کے خلاف لڑنے لیکن کیا پوا  
ایک کے بعد ایک گھوٹلا۔ چارہ گھوٹلا۔ دوا گھوٹلا۔ وردی  
گھوٹلا۔ زمین گھوٹلا اور میں کہنا نہیں چاہتا ہوں کہ ہمارے  
اندر سرکار کے جتنے بھی وہاگ ہیں وہ۔ "اوٹیٹ راشی سے  
ایکس نکاسی" کرتے ہیں۔ ہماری یہ استھتی ہے اور استھتی  
یہاں تک ہے کہ یونیورسٹی۔ کالجوں کے پروفیسر س کو۔  
ادھیاپکوں کو۔ کرمچاریوں کو تین تین مہینے سے لیکر چھ چھ  
مہینے تک ہر ماہ تنخواہ کا بھگتان نہیں ہوتا ہے اسکے علاوہ  
جتنے بھی کارپوریشنش ہیں۔ نگر نیگم ہیں۔ جہاں سب سے  
زیادہ دلت کام کرتے ہیں۔ صفائی کرمچاری ان کو ۹ مہینے۔ دس  
مہینے سے لیکر ۲۶ مہینے تک کا ہر ماہ تنخواہ نہیں دیا جاتا۔ یہ  
بے ہماری استھتی...  
  
مہودے۔ میں سدن کے مادھیم سے آپ کے  
مادھیم سے کینڈر سرکار اور پورے دیش کی جنتا کو بتانا چاہتا  
ہوں

## Discussion on

کہ ہماری حالت کیا ہے۔ ہماری حالت یہ نہیں ہے کہ لالو جی کو جیل میں بند کر دیا گیا اور وہاں کی استھنی ختم ہو گئی۔ رابڑی جی سے بھی پمارا کچھ لینا دینا نہیں ہے۔ مہیلا بنی ہے مکہیہ منتری خوشی کی بات ہے۔ ہم لوگ تو مہیلا کے ۳۳ پرنسپل شت آرشن کے لئے روز ہلاکر رہے ہیں۔ لیکن کینڈر سرکار بل ہی نہیں لائے ہے۔ آج کچھ لوگ مہیلا کے بڑے پروشنسک بنے ہوئے ہیں، لیکن اندر سے پروشنسک نہیں ہیں۔ زبان سے پروشنسا کرتے ہیں۔ رابڑی دیوبی جی مکہیہ منتری بنیں۔ لیکن میں آپکو بتانا چاہتا ہوں۔ آپ لوگ بھی جانتے ہیں کہ انہیں ہومت کیسے حاصل ہوا۔ انکی تعداد بھی آپکو معلوم ہے۔ نرالٹے کو ملا کر ایک جہار کہنڈ مکتی مورچ سورین گٹ ہے جو پورے دیش میں اور وشو میں شہرت حاصل کر چکا ہے کہ دل میں جب پورو پردهاں منتری نر سما راؤ جی کی سرکار کو بچانا تھا تو کیسے بچایا انہوں نے۔ انکے کارنا میں اجاگر ہیں پورے دیش میں۔

مہودے میں آپکو بتانا چاہتا ہوں کہ ایک الگ جہار کہنڈ راجیہ کی مانگ ہماری پارٹی ورشوں سے کر رہی تھی۔ لیکن جب الگ راجیہ کی بات آئی تھی

## in Bihar

تو شری لاو پرساد کہتے تھے کہ جہار کہنڈ راجیہ کی استھانبا انکی لحش پر پوچھی۔ کیا یہ بات جھوٹ ہے۔ سچائی ہے یہ۔ اب جب انکو اپنے سرکار پچانے کا بوا تو انہوں نے ودهاں سبھا میں الگ جہار کہنڈ راجیہ کا پرستاؤ پاس کر دیا۔ اور کیا کیا کیا یہ جو کمیٹی بنائی گئی تھی جہار کہنڈ اکشیتر سیمیتی اسکا وہ چنانہ میں کرا سکے لیکن اسکے ادھیکس اور اپاڈھیکس۔ سورج منڈل اپاڈھیکس ہیں اور ادھیکس ہیں شبو سورن انکو مکہیہ منتری کا درجہ اور سورج منڈل کو کیبینٹ منتری کا درج دے دیا۔ اسکو آپ کیا کہیں۔ یہ راج نیتک بھر شناچار نہیں ہے تو کیا ہے۔ یہ پولیسکل کرپشن ہے۔ سو فیصدی راج نیتک بھر شناچار۔ بھر شناچار صرف آرٹھک اکشیتر میں نہیں ہوتا۔ راج نیتک بھر شناچار بھی اپنے دیش میں چل رہا ہے۔ یہ میں آپکو بھرے ہوئے دل سے کہنا چاہتا... "مدخلت..."

آپ کی پارٹی نے سمرتھن نہیں کیا۔ ہم لوگ اسکے لئے لڑ رہے ہیں۔ انہوں نے یہ بھی کہا تھا کہ چار کروڑ ترہ سار اور مددیہ ہماری جنتا دو کروڑ۔ دکسن ہمار کے خلاف لڑے گی۔ میں سرو دلٹے کی بیٹھک میں تھا اسوقت۔ میں نے کہا تھا کہ آپ مکہیہ منتری کی کرسی پر ہیں۔ اس سے ہٹ کر کچھ اس طرح

کی بات کریں اور جب آپ سروالے کی بیٹھک بلائے پیں تو عام سہمتی دلانے کیلئے بلائی تھی۔ ایک دن چلے ہی اس طرح کا بیان کیوں دیا۔ اسلئے میں اسمیں نہیں جانا چاہتا یہ تو یہ استھق ہے، ہمارا راجہ بھی۔ وہاں وہی اور ویوستھا نام کی کوئی چیز نہیں ہے۔ گرہ منتری جی جو ہی جانتے ہیں۔ کیندر سرکار بھی جانتے ہیں۔ لیکن انکی مجبوری ہے کچھ کرنہیں سکتے۔ میں انکی مجبوری سے ہمدردی رکھتا ہوں اور میں ہمیں اس مجبوری کو جانتا ہوں... "مدخلت" ...

**شروع و شناخت شاستری:** مجبوری بتا دیجئے

نا۔

آپ سبھا ادھیکش "شروع ترلوکی ناتھ چڑھی": وہ گرہ منتری جی خود بتا دینے۔ انصاری جی آپ اپنی بات کہئے۔

**شروع جلال الدین انصاری:** ہمار میں "وہی

ویوستھا" نام کی چیز نہیں ہے۔ اور پچھلے سال میں ہمار کے اندر میں ماننی گرہ منتری جی سے کہوں گا کہ پچھلے سال کے راج میں ہمار میں کتنے دلتون کی ہتیا ہوئی۔ کتنے پچھڑوں کی ہتیا ہوئی۔

کتنے نر سنہار ہوئے جس میں پچھڑے اور دلت مارے گئے اسکی بھی سوچی آپ سدن کو دین تب پتہ چلیا کہ ہمار میں پچھڑوں کا راج چلا رہے تھے۔ ان کو ساما جیک نیائے دے رہے تھے یا کیا کر رہے تھے۔ ہمارے کانگریس کے جہائی کہتے ہیں کہ بھرشٹا چار سے زیادہ خطرناک سمپردائیواد ہے اور سمپردائیواد سے لڑنا ضروری ہے۔

**شروع سریندر کمار سنگلا:** دونوں کو خطرناک کہا ہے بم نے۔

**شروع جلال الدین انصاری :** آپ سمپردائیواد سے نہیں لڑ سکتے۔ سمپردائیواد سے لڑنے کی آپکی جو پرتو بدھتا تھی وہ سماپت بوگئی ہے اور ہندوستان کی جنتا... "مدخلت" ...

**شروع سریندر کمار سنگلا:** آپ کو تھی بھایا بھے راج کرنے کیلئے۔ کیونکہم لڑنا چاہتے ہیں۔

**آپ سبھا ادھیکش:** سنگلا جی بیٹھ جائیے۔ آپ کی طرف سے مینا جی بولینے۔

**شروع جلال الدین انصاری :** ۱۹۸۹ کے بھاگلپور کے دنگے کے وقت آپ کی سرکار تھی "مدخلت" ...

اپ سہا ادھیکش: انصاری جی آپ چیئر کو ایڈریس کرئے اور ختم کرئے۔

شری جلال الدین انصاری: جب ۱۹۸۹ء میں ہاگلپور میں وہاں دنگے ہوئے تو اس سے آپ کی حکومت وباں تھی اور پورا پردہ ان منتری شری راجیو گاندھی گئے تھے اور دو کروڑ روپیے دیکھ آئے تھے اس دنگا پیزتوں کے پونرواس کیلئے اور سہایتا کیلئے۔ آپ کی سرکار نے کتنا روپیا خرچ کیا اور جو پچاتو لاو پرساد نے ہی انکی مدد نہیں کی اور میری جانکاری میں ۱۹۵۱ء میں معاملے پیں جنکو آجتک نہ معاوچہ دیا گیا اور جو گھر بار چھوڑ کر بیدخل پو گئے، انکا پونرواس بھی نہیں کیا گیا آپکا داہرن ہے ۶ دسمبر، ۱۹۹۲ء۔ "مداخلت"...

اپ سہا ادھیکش "شری ترلوک ناتھ چتر ویدی": ابھی ہمار پر چرچے چل رہی ہے آپ اسی پر رہیں۔

شری جلال الدین انصاری: اداہرن دے رہا ہوں سمپردائیواد کے خلاف انکے لڑنے کا۔ آپ کے تتكلیں پردہ ان منتری دلی میں بیٹھے رہے اور مسجد کو توڑ دیا گیا۔ یہی آپ کا سمپردائیواد سے لڑنے کا طریقہ ہے۔ آپ کے سب

طریقہ ہندوستان کی جنتا جانقی ہے جو بہر شٹا جار سے نہیں لڑے گا وہ سمپردائیواد سے ہی نہیں لڑے گا۔ میں آپ کو کہنا چاہتا ہوں۔ کانگریس کے متوفی سے کہنا چاہتا ہوں "مداخلت"...

اپ سہا ادھیکش: اب آپ سماپت کیجئے۔ ۳  
منٹ کی جگہ ۲ منٹ سے بھی زیادہ کا سامنے پوچھا ہے۔

شری جلال الدین انصاری: میں کیندر سرکار سے یہ نہیں کہتا کہ ہمار میں دفعہ ۳۵۶ لائگو کیجئے لیکن میرا کہنا یہ ہے کہ ہمار میں آرتھیک اراجکتا ہے۔ شیکشیک اراجکتا ہے قانون اور ویوستہ نہیں ہے تو سمودهان کی دھارا ۳۶۰ کے تحت آرتھیک آپات کال کے تحت وہاں آپ کچھ کنٹرول کر سکتے ہیں یا نہیں۔ میں گرہ منتری جی سے اور کیندر سرکار سے یہ جانتا ہوں۔

آخری بات میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ سی-بی-ائی کے لوگ کوئی دودھ کے دھلے نہیں پیں۔ جن ست میں اور دوسرے اخباروں میں روز انکے گزر بڑی کے معاملہ چھپتے رہتے ہیں۔ لیکن وہ آرمی کس استھنی میں بدل رہے تھے۔ انکا بدلنا غلط تھا یا نہیں تھا۔ میں انکا پکش نہیں لے رہا

ہوں۔ آپ اس بارے میں جو مناسب کارروائی کر سکتے ہیں کریں۔ ساتھ ساتھ ہمار کے جتنے بھی ناپ آفیشیل ہیں۔ ایس۔ پ۔ کلکٹر۔ مکھیہ سچیو۔ جتنے بھی یہ بڑے بڑے پد ادھیکاری ہیں۔ پولیس اور پرشانس کے۔ وہ ابھی تک لالو پرساد یادو کی بات مانتے ہیں۔ چاہے وہ جوڈیشیل ریمانڈ میں رہ رہے ہوں یہ بھی سچ ہے کہ جس دن سی۔ بی۔ آئ۔ کے لوگ رات میں انکو کھو ج رہے تھے آپ نے سماچار پتروں میں پڑھا پوکا کہ اس دن مکھیہ منتہ آوس میں دو بیٹھکیں ہوئیں۔ ایک تو رابری دیوی نے بلائی تھی اور رات میں دوسری میٹنگ لالو پرساد یادو نے بلائی تھی۔ اگر سارے سماچار غلط ہیں تو مجھے کچھ نہیں کہتا ہے۔

مہودے جن ادھیکاریوں نے سی۔ بی۔ آئ۔ کے وارنٹ ایگری کیوٹ کرنے میں سہیوگ نہیں دیا۔ انکے خلاف آپ کارروائی کیجئے۔ ان کو دنڈت کیجئے۔ بمارے مترشی آہلو والیہ جی آج کل لالو ج کے بڑے مددگار ہو رہے ہیں۔ کل تک تو وہ خلاف بولتے تھے۔ معلوم نہیں ایسا کیوں بوربا ہے۔ کچھ کارن ضرور ہے۔ خیران کارنوں کو آپ اور ہم سے

ایک دن دیکھ لینے۔ وہ کہتے ہیں کہ "جن ہت یا چیکا" کو ختم کر دینا چاہیے اسے یہی تو ایک راستہ پچاہے ان "مدانہ" بھرستا چاریوں کے خلاف جن ہت کے سوالوں پر ہائی کورٹ اور سپریم کورٹ میں جاکر اس طرح کے کارناموں کے خلاف کارروائی پوری ہے۔ اسلئے میں گردہ منتہی جی سے کہنا چاہونگا۔ کہ پ۔ آئ۔ ایل۔ جو ہے اس پر کوئی روک لگانے کی بات مت کیجئے اگر کوئی غلط شکایت کرتا ہے۔ تنگ کرتا ہے تو کورٹ اسکو دیکھے گی۔ کسی کو بدنام کرنے کیلئے۔ پریشان کرنے کیلئے غیر ضروری طور پر کورٹ میں کیس کیا جاتا ہے تو کورٹ اسکو دیکھے گی۔

مہودے میں "جوڈیشیل ایکٹ وزم" کے پکش میں نہیں ہوں۔ لیکن جہاں پر کاریہ پالیکا وہیں ہو جائے وہاں نیائے پالیکا کی سکریٹا بڑھے گی یا نہیں۔ یہ تو آئومیںک ہے۔ آج کاریہ پالیکا اپنے فرض کو نہیں نہیں دیا ہے۔ اسکا نتیجہ یہ ہے کہ کبھی کبھی بھی میں جوڈیشیری میں اکٹیوزم بڑھا ہوا دکھائی دیتا ہے۔

مہودے۔ ویسے میں هندوستانی ہوں۔ اور پورے دیش کی بات کرتا ہوں۔ لیکن ہمار میں جنم لینے کے ناطے میں

کہنا چاہتا ہوں کہ ہمار آج کہاں پہنچ گیا ہے مہودے۔  
۱۵ اگست ۱۹۹۷ کو جب ہمارا دیش آزاد ہوا تھا تب ہمار  
ہندوستان کا جو تھا پچھڑا بوارا جیہے تھا اور آج ہم آزادی  
کی ۵۰ ویں جینی مانانے جا رہے ہیں آج سرکاری  
رپورٹ کے مطابق ہمار ہمارے دیش کا ۱۹۱۴ والی پچھڑا  
بوارا جیہے ہے۔ یہ ہے ہمار کی تصویر اور لوگ کہتے ہیں کہ  
ہمار پر چرچ کرنے کی ضرورت نہیں ہے ضرورت ہے  
اسلئے کپورے دیش کی افیصد آبادی ہمار میں نواس  
کریں ہے۔ یہ ایک بڑا پر دیش ہے وہاں کی جنتا کی  
ساماجیک۔ آرتھیک۔ شیکھنیک آوشتا ہے تو پی قابل  
رحم ہے۔ ہمار آج یہ روزگاری میں سب سے آگے  
ہے۔ جہالت میں سب سے آگے ہے غربی میں سب  
سے آگے ہے۔ آپ کہتے ہیں کہ ہمار میں حالت ٹھیک  
ہے۔ کچھ گزر بُر نہیں ہے۔ آپ جنتا کے کسٹوڈین ہیں  
...مداخلت..." ...

اپ سبھا ادھیکش "شری ترلوک ناتھ چتروبیدی": اب  
آپ سماعت کریں۔

### شری جلال الدین انصاری: وہاں کوئی

گھوٹالہ نہیں ہوا۔ بلکہ میں کہتا ہوں کہ وہاں خزانے کی  
لوٹ بوئی ہے اور خزانے کی لوٹ بندہوںی چاہئے۔ سرکار  
سے یہ نویدن کرتے ہوئے ہیں اپنی بات ختم کرتا ہوں۔

**شی مولചन্দ مीणا (राजस्थान) :** उपसभाध्यक्ष महोदय, बिहार की कानून व्यवस्था के बारे में जो बात हो रही थी सदन में, मेरे कुछ साथी नैतिकता की भी बात कह रहे थे, कुछ कानून व्यवस्था की बात कह रहे थे, कुछ भ्रष्टाचार की बात कह रहे थे। लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि मेरे भाई - भारती जनता पार्टी के साथी किस नैतिकता की बात करते हैं, जनता दल के भाई किस नैतिकता की बात करते हैं? जो कल तक नैतिकता की बात करते थे वह आज उस नैतिकता से मुकर रहे हैं। बिहार के अदर उपसभाध्यक्ष महोदय, कानून की व्यवस्था की जो स्थिति है वैसे तो सुना करते थे कि बिहार में कानून व्यवस्था की स्थिति खराब रहती है लेकिन अब कुछ ज्यादा ही खराब है और उसके कारण आज बिहार की जो शासन व्यवस्था है वह इतनी कमज़ोर है कि वहां पर असामाजिक तत्व-जो गुड़ा तत्व है वह अपने कारनामों के लिए अब सामने आने लगे हैं। तो ऐसी स्थिति पर चर्चा करते बिहार की कानून व्यवस्था पर करते तो ठीक लगता। लेकिन चाहे इधर के साथी, चाहे उधर के साथी सबका एक ही उद्देश्य था - लालू प्रसाद यादव के बारे में। ... (व्यवधान) ... जो संवेधानिक अधिकारों के उल्लंघन की बात की जाती है, आज ऐसा लगता है कि बिहार के अदर हम लोग हैं, आज ऐसा लगता है कि बिहार के अदर हम लोग ही ऐसी व्यवस्था के सहयोगी हैं और सहयोग के कारण यह व्यवस्था वहां पर पैदा हुई है। जो भारतीय जनता पार्टी के लोग हों, उन्होंने वहां के चीफ मिनिस्टर के खिलाफ एक आरोप लगाया था भ्रष्टाचार का। सही बात है यदि भ्रष्टाचार किया है तो उसको फांसी पर लटका दो, हम सपोर्ट नहीं करते। सी.बी.आई. में पुलिस अधिकारी होते हैं, पुलिस अधिकारी चार्ज शीट कर दे इस आधार पर हमारे भाई नैतिकता की दुहाई देते हैं और फिर इस्टीफे की बात करते हैं। वही लोग इस्टीफे की मांग कर रहे हैं जिन्होंने आजादी की लड़ाई के अदर अंग्रेजों का साथ दिया और वही आजादी की 50वीं स्वर्ण जयंती मनाने की बात कर रहे हैं।

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** बिहार की बात कहिए, क्योंकि समय बहुत कम है।

**श्री मूलचन्द मीणा :** मैं बिहार की बात ही कर रहा हूँ। ... (व्यवधान) ... मैंने यह कहा है कि श्री लालू यादव जी ने अगर भ्रष्टाचार किया है तो उसको फांसी पर लटकाइए। मैं भ्रष्टाचार की सपोर्ट नहीं कर रहा हूँ, लेकिन जो नैतिकता की बात करते हैं उनकी बात कह रहा हूँ कि हम कितने नैतिक लोग हैं। उपसभाध्यक्ष महोदया, बिहार की कानून व्यवस्था को खराब करने में

केवल सरकारी पक्ष का ही दोष नहीं है। उसके हम सब दोषी हैं। कानून व्यवस्था को ठीक करने के लिए वहाँ का प्रशासन यदि प्रयास करता है तो उनको मैतिकता के नाम पर, भ्रष्टाचार के नाम पर यदि पुलिस अपनी ही रिपोर्ट पर चार्ज शीट पेश करे तो उसी को आप शोरोगुल मचाकर, हल्ला-गुल्ला करके वहाँ की स्थिति को खराब करते हैं। आज बिहार की स्थिति के बाद जो लालू प्रसाद यादव की बात को हम देखते हैं तो उपसभाध्यक्ष महोदय, वहाँ पर जो कानून है, न्याय प्रणाली हैं,\*

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** जुड़िशियरी के बारे में इस तरह का एलीगेशन मैं रिकार्ड के ऊपर नहीं जाने दूँगा। इसलिए आप संतुलित भाषा में जो बात कहनी है वह कहिए।

**श्री मूलचन्द मीणा :** सी.बी.आई. संदेहास्पद इसलिए हो गयी है कि जिस सी.बी.आई. ने इतवार के दिन प्रेस कॉफ़ेंस बुलाकर लालू यादव को चार्ज शीट की ओर उसकी एक कापी पहले से ही लोक सभा में विपक्ष के नेता को मिल जाए तो इससे सी.बी.आई. के अधिकारियों की निष्पक्षता पर आंच क्यों नहीं आएगी? उन पर लाठन क्यों नहीं लग सकता है? और उससे ज्यादा मुझे समझ में नहीं आ रहा है। यह सोच रहे थे कि विपक्ष के नेता को रिपोर्ट मिल गयी होगी लेकिन लालू यादव को गिरफ्तार करने के लिए आर्मी की सेना को बुलाना यह साबित करता है कि वह सी.बी.आई. का अधिकारी लालू प्रसाद दोषी है। और मेरे भाई भारतीय जनता पार्टी के लोग कहते हैं कि विस्वास को यदि हटाया गया तो हम वापिस कोर्ट में जाएगे क्योंकि विस्वास की निष्पक्षता पर अब भरोसा नहीं रहा है। वह तो एक पार्टी बन कर रोज समाचार पत्रों में, टी.वी. पर अपनी फोटो दिखाकर एक प्रचार का माध्यम बन गये हैं। और आर्मी को बुलाते हैं। आप इस देश के गूह मंत्री हैं, आपका एक अधिकारी बिना आपकी इजाजत के, उच्च अधिकारियों की इजाजत के आर्मी बुलाता है और आप चुप बैठे हों। आपको अब तक उस अधिकारी को सर्पेंड कर देना चाहिए था। आप चुप्पी लगाकर बैठे हैं, इसका मतलब है कि केन्द्रीय सरकार भी अपनी स्थिति क्लीयर नहीं कर रही है। इसका मतलब केन्द्रीय सरकार को जो संगठन सपोर्ट कर रहे हैं, उनके दबाव के अन्दर आप सही बात को समने नहीं आने देना चाहते हैं।

**एक माननीय सदस्य :** यह भी हमारे दबाव में है।...  
(व्यवधान)...

**श्री मूलचन्द मीणा :** नहीं। अभी असांरी जी बोल रहे थे, इनके दबाव के अन्दर- यह मजबूरी की बात कर रहे थे। मुझे अफसोस हो रहा था। मजबूरी यह है कि लालू यादव को जब तक हम सपोर्ट कर रहे हैं, तब तक तो हम ...  
(व्यवधान)...

**श्री गोविन्दराम मिरी :** आप भी समर्थन कर रहे हो? ...  
(व्यवधान)...

**श्री मूलचन्द मीणा :** लालू यादव का जब तक यह सपोर्ट कर रहे थे। तब तक कुछ नहीं बोलते थे। लेकिन आज....

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** नहीं, आप इधर बोलिए। बाकी बातों में मत पड़िए। समय का ध्यान रखिए वरना मुझे दूसरे वक्ता को बुलाना पड़ेगा। इसके बाद गृह मंत्री जी को उत्तर देना है। एक बिल को भी आज आना था तो आप कृपया समय का ध्यान रखते हुए अपनी बात कहें।

**श्री मूलचन्द मीणा :** महोदय, मैं कल्याण सिंह जी, भारतीय जनता पार्टी के उपसभाध्यक्ष ...  
(व्यवधान)...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** जो चाहेंगे वह कहें लेकिन आप इधर देखते हुए कहें, उधर देखते हुए नहीं।

**श्री मूलचन्द मीणा :** महोदय, मैं भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष श्री कल्याण सिंह जी को धन्यवाद देना चाहूँगा।

**श्री गोविन्दराम मिरी :** कल्याण सिंह जी बीच में कहां से आ गए। वह हाउस के मैंबर नहीं है ...  
(व्यवधान)...

**श्री मूलचन्द मीणा :** अरे भाई, सुन तो लीजिए। उनको धन्यवाद न दूँ तो ठीक है। मैं उनको धन्यवाद देना चाहता हूँ।

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** ध्यान देने में कोई खराबी नहीं है। आप समाप्त कीजिए। आप इधर देखकर धन्यवाद देते हैं। इधर देखकर धन्यवाद दे दीजिए।

**श्री मूलचन्द मीणा :** बिहार की विधान सभा में से वहाँ की मुख्य मंत्री एक औरत को चुना गया, उस पर उन्होंने यह कहा कि यह अनुचित नहीं किया गया है, लेकिन जब मैंने आडवाणी जी का बयान पढ़ा तो अफसोस हुआ कि एक तरफ तो उनके उपाध्यक्ष जी कहते हैं कि अच्छा हुआ और यह कहते हैं। कि गलत हुआ। इससे उनकी भावना का पता लगता है। यह चाहते हैं कि बिहार के अंदर राष्ट्रपति शासन लागू हो। जो लोग 356 की धारा का विरोध करते हैं, आज वह

\*Expunged as ordered by the Chair.

लोग उस 356 की धारा का प्रयोग करना चाहते हैं जब कि वहां पर चुनी हुई विधान सभा है, चुनी हुई मुख्य मंत्री है। लातू प्रसाद यादव जेल के अंदर है और यह कहते हैं, आज भी कह रहे हैं कि जेल में बैठकर लालू यादव शासन कर रहा है। उसकी ओरत राज नहीं कर सकती। उसकी ओरत मुख्य मंत्री नहीं बन सकती। ... (व्यवधान)...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** मिरी जी, आप बैठिए।

**श्री मूलचन्द मीणा :** उपसभाध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार की भावना के साथ बिहार की बात पर विचार किया जा रहा है - कानून और व्यवस्था को ठीक करने के लिए मैं गृह मंत्री जी ने निवेदन करना चाहूँगा कि वहां पर कानून और व्यवस्था हमेशा खराब रही है, उसको ठीक किया जाए लेकिन कानून और व्यवस्था उतनी भी खराब नहीं हुई है कि जो लोग 356 का विरोध करने वाले हैं, वह जबरदस्ती धारा 356 लागू करना चाहें। आज यदि हम महाराष्ट्र की बात करें तो सब चुप्पी साथ जाएंगे। ... (व्यवधान) ... जनादेन यादव जी बलात्कार की बातें कर रहे थे। अरे यादव साहब \* तो क्या यह बात कानून और व्यवस्था की नहीं है? ... (व्यवधान)...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी) :** आप ऐसी विवादास्पद बातों को मत कहिए। इस तरह का ऐलीगेशन जो है ... (व्यवधान)...

**श्री रामदास अग्रवाल :** महोदय, यह वह बात कर रहे हैं जिसका इस विषय से कोई संबंध नहीं है। वह गैर जिम्मेदारान बात कर रहे हैं और गलत बात कर रहे हैं। ... (व्यवधान) ... यह क्या मतलब है? ... (व्यवधान)....

THE VICE CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI): This sentence stands deleted. This allegation stands deleted.

**श्री गोविन्दराम मिरी :** उपसभाध्यक्ष जी, पाइंट ऑफ आर्डर ... (व्यवधान)...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** आप तशरीफ रखिए ... (व्यवधान) ... आप समाप्त कीजिए।

**श्री मूलचन्द मीणा :** मैं समाप्त कर रहा हूँ। ... (व्यवधान)...

\*Expunged as order by the Chair.

**श्री रामदास अग्रवाल :** वे इस दोष से मुक्त हो चुके हैं। ... (व्यवधान) ... उपसभाध्यक्ष जी, जो व्यक्ति इस सदन का सदस्य नहीं है। उसके बारे में ... (व्यवधान)...

**श्री सिकन्दर बख्त :** सदर साहिब, यहां से प्रधान मंत्री जी के बारे में कुछ कहा गया था तो उसको आपने रिकार्ड से हटा दिया है। यह बात भी उसी कदर सीरियस है, जिस तरफ इशारा किया गया है, इसको बिल्कुल रिकार्ड से हटा दिया जाये।

**अंश्री स्कंदर बख्त:** صدر صاحب۔  
یہاں سے پردهان منtri جی کے بارے میں کچھ کہا  
گیا تھا تو اسکو آپنے ریکارڈ سے ہٹا دیا ہے۔ یہ بات  
بھی اسی قدر سیریس ہے جسطر اشارہ کیا گیا  
ہے۔ اس کو بلکل ریکارڈ سے ہٹا دیا جائے۔

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** हां, मैंने स्वयं इस तरह का निर्देशन दे दिया है ... (व्यवधान)...

**श्री मूलचन्द मीणा :** क्या आप इसकी सीबीआई से जांच करा सकते हैं? ... (व्यवधान)...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** आप समाप्त कीजिए।

**श्री शिव चरण सिंह :** आप सीबीआई से ... (व्यवधान)...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** मीणा जी, आप समाप्त करिए। आप अगर एकाध और सटेंस कहना चाहते हैं तो वह कहकर समाप्त कीजिए। आप अच्छे वक्ता हैं, बड़े अनुभवी हैं, आप अपने ढंग से उसको समाप्त कर दीजिए।

**श्री मूलचन्द मीणा :** उपसभाध्यक्ष महोदय, जो सीबीआई के अधिकारी कहते हैं कि न्यायालय ने उन्हें मौखिक आदेश दिए हैं, उस आदेश के मुताबिक ही हमने सेना को बुलाने के लिए लेटर लिखा है, तो मैं जानना चाहता हूँ कि क्या उनको कोई पत्र मिला है? क्योंकि गृह मंत्री जी ने बयान में बताया है कि उन्होंने साफ मना किया है कि हमने इस प्रकार का कोई आदेश नहीं किया है ... (व्यवधान)...

† [] Transliteration in Arabic Script

**शिव चरण सिंह** (राजस्थान) : जो सिविल एडमिनिस्ट्रेशन का प्रोसीजर है, उसको होम मिनिस्टर साहब बतायेंगे ... (व्यवधान)... आर्मी आती है, किन परिस्थितयों में आती है उसकी जानकारी करनी चाहिए ... (व्यवधान)...

**उपसभाध्यक्ष** (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) : नहीं, वह जानकारी है। आप रहने दीजिए। आप व्यर्थ में हस्तक्षेप मत करिए। उनको समाप्त करने दीजिए।

**श्री मूल चन्द्र मीणा** : उपसभाध्यक्ष महोदय, आर्मी बुलाने की बात से सावित होता है कि बिहार के अन्दर कानून-व्यवस्था के बिंगड़ने में उन लोगों का बहुत बड़ा हाथ है जो लोग इस प्रकार गैर-कानूनी काम करते हैं। उनके खिलाफ सख्त कार्रवाही होनी चाहिए। गृह मंत्री जी यहां पर बैठे हुए हैं मैं उनसे निवेदन करना चाहूँगा कि आप यह स्पष्ट करें कि सीबीआई के अधिकारियों ने क्या आर्मी कानून बुलाई है और बुलाई है तो उनके खिलाफ क्या कार्रवाई कर रहे हैं?

**उपसभाध्यक्ष** (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) : श्री सतीश प्रधान जी, आप बोलिए। आपके पास केवल पांच मिनट का समय है। कृपया उसी में समाप्त कर दीजिए।

**श्री सतीश प्रधान** : उपसभाध्यक्ष महोदय, आपका धन्यवाद। मैं तीन मिनट में ही समाप्त कर दूँगा। महोदय, मैं आपका आभारी हूँ। अभी जिस विषय पर सदन में चर्चा चल रही है वह बिहार है। बिहार में पिछले सालों में जो घटनाएं घटी हैं उनका समर्थन करना बिल्कुल अयोग्य रहेगा और लांछनास्पद है, ऐसा मेरा और मेरी पार्टी का पूरा विश्वास है। वहां पर बहुत सारे घोटाले हुए कानून-व्यवस्था बिल्कुल बिंगड़ गई और रेल यात्रा करना भी मुश्किल हो गया। दलितों के ऊपर अत्याचार, उनका खून-खराबा इतन हुआ कि हद से बाहर हो गया। चार दिन पहले यहां चर्चा हुई कि महाराष्ट्र में दलितों पर अन्याय हो रहा है, इस विषय पर चर्चा हुई। मैं बताना चाहता हूँ कि महाराष्ट्र में दलितों के बारे में जितना ख्याल रखा जाता है और महाराष्ट्र में दलितों को ऊपर उठाने के लिए जो भी कुछ व्यवस्था करने की आवश्यकता होती है वह की जाती है। वह अलग विषय है और मैं उस विषय पर कभी अवश्य बात करूँगा। महाराष्ट्र की सरकार ने अभी तक किसी दलित पर अत्याचार नहीं किया है। बल्कि उनको सम्भात करके ऊपर उठाने की कोशिश की है। बिहार में हद से ज्यादा दलितों के ऊपर अत्याचार हुआ। आज मैं सदन में देख रहा हूँ कि महाराष्ट्र की सरकार को बर्खास्त करने

के लिए जो लोग बात कर रहे थे, उसमें से बहुत सारे लोग आज बिहार की सरकार के समर्थन देने की कोशिश कर रहे हैं। मेरी समझ में नहीं आता है कि वह क्या राजनीति है। हम इस सदन में बैठे हैं, यह राज्य सभा का सदन है। यह सदन अपर हाउस है। इस सदन में जो भी बात करनी है, इस सदन की गरिमा रखकर बात करनी है। यहां सदन में बैठकर बात करते समय हम भूल जाते हैं और यहां सदन के बात करते समय सिर्फ हमारी राजनीति कैसे खींची जाये और दूसरे जो हमारे अप्रिय है उसका कांटा कैसे निकाला जाये उसको कैसे बाजू में निकाला जाये, उसका कैसे भेद किया जाये। यह सब छोड़करके अन्य विषयों पर कोई बात नहीं होती है। इस विषय से मैं चिंतित हूँ। मैं बताना चाहता हूँ केवल दो ही उदाहरण और उसके बाद मैं अपनी बात समाप्त कर दूँगा।

मेरा कैरियर जब शुरू हुआ तब 1967 के साल में मैं नगर पालिका में चुनकर आया था और वहां का मेरा अनुभव था 1974 से 1981 में नगर पालिका में मैंने नगर अध्यक्ष की हैसियत से काम किया उस समय मैंने म्युनिसिपैलिटी बरखास्त करने के लिए स्टेट गवर्नर्मेंट ने कम से कम दो या तीन बार मुझे नोटिस दिया था तब मेरा मत यह था कि किसी भी हालत में हमें जनता ने चुनकर दिया है। हमारी म्युनिसिपैलिटी का कारोबार बरखास्त करने का सरकार को अधिकार नहीं चाहिये। यदि हम गलती करते हों तो हमें लोगों को पीछे बुलाने का हक होना चाहिए और यहां 1992 में राज्य सभा के सदन में आया तो तभी से मैंने यहां यह देखा कि यहां किसी की कोई भी सरकार हो, कहीं कुछ भी हो या न हो, जो कुछ हुआ है वह सुधारने के लिए क्या करना चाहिये, उसके लिए क्या संशोधन करने चाहिये इस विषय पर हम यहां बात या चर्चा नहीं करते। तो किसी की सरकार खींचकर बाहर निकालें, इसके सिवाय दूसरी कोई चर्चा इस सदन में नहीं होती है। सर, हमारी स्वतंत्रता की पचासवीं सालगिह हम मना रहे हैं और तब से अभी तक इतनी सारी किताबें निकालनी पड़ी, अभी तक हमने सैन्ट्रल गवर्नर्मेंट का राज कितने राज्यों में किसने लाया, उसका किताब बनाया है। क्या यह हमारे स्वतंत्र के लिए शोभादायक बात होगी? यदि यह किसी को शोभादायक बात लगती है तो मैं मानने के लिए तैयार नहीं हूँ। यह लोकतंत्र का अपमान है और लोकतंत्र का अपमान जिस ढंग से करने की कोशिश चल रही है यह गलत है। मैं यहीं बताने के लिए यहां खड़ा था कि इस विषय पर संशोधन जी से आवश्यकता है। मैं आपके माध्यम से गृहमंत्री जी से

प्रार्थना करुंगा, मुख्य मंत्री परिषद ने इस विषय पर चर्चा करना शुरू किया है। इस विषय पर परिसंवाद आयोजित करिये, सैमिनार कीजिये। अलग-अलग विषयों पर चर्चा करके जैसी बिहार में घटना के बाद वहां किस ढंग से व्यवस्था करने की आवश्यकता है, कानूनी व्यवस्था कैसी करनी है इस विषय पर गौर करें उसमें रास्ता कैसे निकाला जाये, इस विषय पर चर्चा करें। सिर्फ आज एक सरकार को बर्खास्त करें, कल दूसरी सरकार को परसों तीसरी सरकार बर्खास्त करें तो इससे यह विषय समाप्त होने वाला नहीं है। लोगों को जो आदत बनी हुई है, लोगों की आदत को सुधारने की क्या, आवश्यकता है, उसके लिए हमें क्या करना है, इस विषय पर हम विचार करें। इतना ही कहकर मैं समाप्त करता हूँ।

धन्यवाद।

**SHRI JOYANTA ROY** (West Bengal): Sir, the situation in Bihar is really grave. Naturally it has come up in the national agenda for two reasons. One is that Shri Laloo Prasad Yadav has tried his level best to stick to the chair, in spite of all round protests to jeopardise the rich heritage of our country's democratic functioning, which has been inculcated for the last SO years. Secondly, as President of the Janata Dal, Shri Laloo Prasad Yadav had taken active part in the formation of the Common Minimum Programme of the United Front Government. That United Front Government also had declared very categorically that the Government would run in a transparent manner and it adheres to the policy of transparency and neutrality. In spite of repeated requests from all partners of the United Front Government, for the alleged fodder scam, Laloo Prasad Yadav stuck to his Chair. It is number one.

It has been discussed in this House from a different point of view and from a different angle that this is not at all a question of jurisprudence, not at all a question of legality. It is simply a question of propriety and morality. If the Chief Minister of a State doesn't bother about morality, propriety, then, it is a direct aspersion on the people who have elected this Government. Therefore, on

behalf of my party, I would like to say categorically that under the aegis of the Left party in Bihar, already people have come out on the streets. They are raising their voice to restore democratic functioning in the State of Bihar. At the same time, we would like to request our hon. Home Minister to take a serious note of the style of functioning which is going on in Bihar in the name of eliminating casteism and racial discrimination. Racial fanaticism is going on in Bihar. That should be stopped. My party categorically says that this is pot the time to impose President's rule in Bihar.

My last point is regarding a review of the role of top bureaucrats in Bihar, particularly, Collectors, Superintendents of Police, etc., by the Ministry of Home Affairs. They have been entrusted to comply with the order of the court. They did nothing. There may be some sort of minimal lapses on the part of the Joint Director, C&I or on the part of the officers of the CBI. Those lapses should not be construed as a gross lapses. I think it is high time that the Central Government should take a serious note of it and stop-all these things which are going on in Bihar. Thank you.

**श्री नरेश यादव :** बहुत बहुत धन्यवाद, उपसभाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बिहार पर चल रही चर्चा में हिस्सा लेने का अवसर दिया। सब से पहले उन तमाम साथियों ने जिन्होंने चर्चा में हिस्सा लिया है, इसके लिए उनका आभार प्रकट करता हूँ कि उन्होंने गम्भीर चर्चा बिहार पर की है। साथ ही साथ मुझे इस बात का अत्यंत दुख है कि इस सम्मिलित सदन का सही उपयोग नहीं किया गया है। ऐसा मुझे लगा जब कुछ साथी अपनी राय प्रकट कर रहे हैं। ऐसा मुझे लगा जब कुछ साथी अपनी राय प्रकट कर रहे थे तो बिहार के बारे में इस तरह से बताया गया कि बिहार में भ्रष्टाचार है, बलात्कार है, डकेतियां हैं, सारी बातें बिहार में ही हैं ताकि पूरे हिन्दुस्तान में कुछ नहीं है। पूरे हिन्दुस्तान से काट कर के बिहार को अलग रूप से सौचना और बिहार का इस महत्वपूर्ण सदन में इस तरह से अपमान करना, मैं इस बात की ओर निंदा करता हूँ। साथ ही साथ मैं यह बात भी कहना चाहता हूँ कि अपने साथियों से अपने वाम साथियों से कि भाजपा वालों का गुस्सा तो मुझे समझ में आता है कि उन्हें यह गुस्सा 1989 का है और 1989 का गुस्सा कहीं न कहीं उतारें,

इसलिए यह आरोप लगा रहे हैं। लेकिन वाम-पंथी साथियों से मैं पूछना चाहती हूँ कि 1990 से हमारे साथ मिल कर सरकार चला रहे हैं, 1995 तक आपकी जबान से एक लफज भी नहीं निकल अचानक कौन सी बात हो गई कि आज निकल रहा है। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि यह भ्रष्टाचार 1977 से है। जबकि बिहार के बिहार सरकार में शामिल अभी जो भा०ज०पा० के नेता हैं ...*(व्यवधान)*...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :**  
 आप बैठिए-बैठिए।

**श्री नरेश यादव :** अभी यह भ्रष्टाचार, यह मान्य है, 1977 से है उस समय जब बिहार सरकार में वित्त मंत्री श्री कैलाशपति मिश्र जी आसीन थे। लेकिन जांच का विषय 1990 से बनता है जब सावित हुआ रिकार्ड में कि भ्रष्टाचार 1977 से है तो जांच 1990 से जब लालू जी ही मुख्य मंत्री है तब क्यों? यह बहुत अहम सवाल है। इसलिए महोदय, कि लालू आज के दिन में बिहार में नहीं, देश में सामाजिक न्याय का प्रतीक बन गए हैं। जब-जब सामाजिक न्याय का प्रतीक व्यक्ति, सामाजिक न्याय का पुरोधा हिन्दुस्तान के तख्त-ओं-ताज पर बैठता है तो निश्चित रूप से हजारों-हजार साल में जिसने हिन्दुस्तान के आम लोगों के पेट और जेल पर लात मारा है, दिमाग का शोषण किया है, उनको जलन होना शुरू हो जाता है। अब यही आज जलन का प्रतीक है कि जिसके कारण लालूजी का विरोध इस तरह से हो रहा है। मैं यह कहता हूँ लालू जी आज जेल, मैं हूँ। आज न्यायालय में मामला पड़ा हुआ है ...*(व्यवधान)*... नहीं, न्यायालय से बढ़ करके कोई नहीं है...*(व्यवधान)*...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :**  
 प्लीज, डोट इंटरप्ट।

**श्री नरेश यादव :** सर्वोच्च न्यायालय का सम्मान आदरणीय नेता श्री लालू प्रसाद जी ने किया है। लालू प्रसाद जी तब तक सरंडर नहीं किए जब तक कि उनका मामला सुप्रीम कोर्ट तक में लंबित था। सी.बी.आई. हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट, और सुप्रीम कोर्ट ने जैसे ही अग्रिम जमानत खारिज किया वैसे ही उन्होंने आत्म समर्पण कर दिया। और जो ठहरने की बात है यह सरकार का डिसक्रीशन है, किसी भी राज्य सरकार का डिसक्रीशन है, उन्हें कहां रखें, कहां नहीं रखें। लेकिन दुख उस समय होता है जबकि जनता के द्वारा चुनी हुई सरकार और जनता के प्रतिनिधियों द्वारा जब निवर्तित

नेता होते हैं वहां के मुख्य मंत्री बनते हैं, जिनका आज जुमा-जुमा आठ दिन हुआ है उन पर भी कीचड़ इस सदन में उछाला जाता है और हमारे नेता विषेश के और विपक्षी पार्टी के लोग उछालते हैं तो निश्चित तौर से उस समय दुख होता है। इसलिए उपसभाध्यक्ष महोदय, हम यह कहना चाहते हैं कि यह हजारों-हजार साल से, वर्षों-वर्षों से गलत मानिसकता का शिकार आज लालू प्रसाद यादव जी हो रहे हैं। लालू प्रसाद का मतलब आज निश्चित तौर से सामाजिक न्याय है और पूरे देश में आज यह माना जा रहा है कि जिस तरह से उनके साथ अन्याय किया जा रहा है आज की तिथि में भी लालू प्रसाद यादव जी ही एक व्यक्ति है जिन्होंने सब से पहले इस कांड का भंडाफोड़ किया और भंडा फोड़ करके उन्होंने केस दर्ज किया। और मुकदमा दर्ज करके दो सौ आदमियों को उन्होंने जेल में बंद किया और बंद करके यहां तक कि बड़ी-बड़ी हस्ती, बड़े-बड़े नेता के जमाई को और उनके समधी तक को जेल में बंद करवाया। बंद करके रिकवरी का काम जब किया जा रहा था तो ऐसा लगा कि लालू यादव जी हीरो हो जायेंगे। उसी समय प्रतिपक्ष के दल ने हंगामा किया और हंगामा करके यह सी.बी.आई. में मामला दे करके मामला को दबाने का काम और बदनाम करने लग गया। इसलिए उपसभाध्यक्ष महोदय, आज एक साथी मीणा साहब बोल रहे हैं थे कि हमारे भा.ज.पा की तरफ से बयान आता है कि विश्वास को हटाया गया तो हम कोर्ट में जायेंगे। और कोर्ट यह कहती है कि अगर विश्वास को हटाया गया तो हम देखें। दोनों की बात एक कैसे मिल जाती है? वहीं बात कोर्ट बोले। जो बात कोर्ट बोले वह बात भा.ज.पा बोले जो बात भा.ज.पा बोले वह बात कोर्ट बोले। इसका मतलब क्या है? ...*(व्यवधान)*...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** कोर्ट क्या कहती है, कोर्ट का संदर्भ छोड़ दीजिये और कहिए आप जो भी कहना है। ...*(व्यवधान)*...

**श्री नरेश यादव :** हम न्यायालय का सम्मान करते हैं, लेकिन\*

...*(व्यवधान)*...

इसलिए उपसभाध्यक्ष महोदय, अंत में मैं सिफ इतना ही वह करके अपनी बात समाप्त करूँगा। गरीबों के साथ में कितना दुष्प्रचार किया जा रहा है। पूर्व मंत्री श्री भोला राम तुफानी उनके बारे में पूरे हिन्दुस्तान के अखबारों में निकला कि भोला राम फरार है।

\*Expunged as ordered by the Chair.

भोला तूफानी जी ने एक तारीख को आत्म-समर्पण किया। अपने घर में पैदल चलकर गए। सी.बी.आई. कहां गई थी? अगर फरार होते तो उन्हें गिरफ्तार करती। भोलाराम तूफानी जी पैदल जाते हैं, अकेले जाते हैं और आत्म-समर्पण करते हैं। चूंकि वह दलित के बेटे हैं तो पूरे हिन्दुस्तान के अखबारों में, आपने पढ़ा होगा, उनकी बड़ी बदनामी वाली बात निकली, लेकिन वह व्यक्ति अपने घर में रहे अपने क्वार्टर में रहे और क्वार्टर में रहकर एक तारीख को जाकर उन्होंने आत्म-समर्पण किया। उनके बारे में मीडिया में और फिर कई लोगों के चर्चा हुई कि भोलाराम तूफानी फरार है। जब भी वह जेल में जाकर अपना फटा हुआ कुर्ता सी रहा है। यह है सी.बी.आई. का न्याय। एक दलित के बेटे पर इस तरह से अव्याचार करने में भी नहीं बचता, इसलिए कि दलित और यह पिछड़ा वर्ग के लोग वहां आज आसीन हैं।....

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :**  
नरेश जी, धन्यवाद। आप समाप्त कीजिए।

**श्री नरेश यादव :** उपसभाध्यक्ष जी, मैं अब समाप्त करता हूँ। अन्त में, मैं यह कहना चाहता हूँ कि यह एक साजिश है, पूरे देश में सुनियोजित ढंग से की जा रही साजिश है, लेकिन जनता हमारे साथ है, जनता लालू जी के साथ है, हमको जनता इसाफ देगी। हम जनता के प्रति समर्पित हैं, इसलिए हम जनता के बीच जाएंगे और जनता हमें इसांफ देगी। न्याय पर भी हमारी पूरी आस्था है। लालू प्रसाद यादव जी निर्दोष है, उनको गलत फंसाया गया है, इसका भी जल्दी पर्दाफाश होगा। बहुत बहुत धन्यवाद।

**SHRI V.P. DURAISAMY (Tamil Nadu):**  
Sir, at the outset, let me assertively say that I am against corruption at all levels. The law should take its own course in punishing the guilty. But unfortunately the political parties are politicising the whole issue. With the resignation of Laloo Ji and the installation of the new Government, the matter was settled, when the popular Government is there, it is against the federal spirit of the Constitution to discuss the daily happenings of the State in this House. The slate subjects are being discussed at the length in this August House. It is important to note that the Centre and the State have to function according to the Constitution. My party is against corruption at all

levels. The leader of my party has taken effective steps to root out corruption at all levels. We filed a lot of cases against the leaders in spite of their political and financial status. I want to say at this juncture, in any case, the State Government should not be demoralised. Instead of going to the people to make them aware about corruption, some political parties are politicising the issue. They tried their best to demoralise a leader.

Secondly, I would like to refer to the statement made by the hon. Minister in respect of the C.B.I. It is understood that the Joint Director of the C.B.I., at Calcutta has instructed the Superintendent of Police at Patna to seek the help of the Army for executing the non-bailable warrant issued against Mr. Laloo. The Army authorities refused to arrest Laloo Ji without the permission of the civil authorities. I salute the army officers for taking the right stand. But the question is: "How could the C.B.I. officers seek the help of the Army?" Without consulting the Central Government, they have approached the Army. I would like to know whether the Government has approached the Army for executing the non-bailable warrant issued against Mr. Laloo Prasad Yadav. If not, which authority decided to seek the Army's help? Sir, the Army is meant to fight the enemy and to control the internal disturbances. The Army should not be demoralised, under any circumstances.

**THE VICE-CHAIRMAN(SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI):** Mr. Duraisamy, please conclude.

**SHRI V.P. DURAISAMY:** Lastly, I would like to know who the CBI officials, who are involved in this act, are. What action does the Government propose to take against those CBI officers? Let the Minister clarify these things. Thank you.

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** श्री वसीम अहमद

**श्री सिकन्दर बख्त :** उधर के बाद इधर का होना चाहिए। उधर से सदस्यों को बोलते काफी देर हो चुकी हैं, अब इधर से भी बुलाना चाहिए।

**نیتا اور وہی دل "شری سکدر بخت": ادھر کے**  
**بعد ادھر کا ہونا چاہئے۔ ادھر سے سدھیوں کو بولتے کافی**  
**دیر بوجکی ہے۔ اب ادھر سے ہمیں بدلا چاہئے۔**

**उपसभाधक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** हिन्दी में बोलते काफी देर हो गयी थी इसलिए मैंने कहा थोड़ी सी अंग्रेजी हो जाए और अब अच्छी उर्दू सुनने को मिलेगी।

**श्री वसीम अहमद :** उपसभाधक्ष जी, आज सतीश अग्रवाल साहब ने जो डिवेट हाउस में ओपन की है, इसमें कोई शक नहीं कि उन्होंने 60-70 फीसदी बातें थोड़ा पोलिटिक्स से ऊपर उठकर कहीं और उन्होंने डिवेट को थोड़ा सा चाहा था कि वे सियासत में न फसें लेकिन आखिर में वे मजबूर हुए उसको सियासी रूप देने के लिए।

आज बिहार की स्थिति को अगर हम ईमानदारी के साथ देखें तो मेरा अपना जाति तौर पर मानना यह है कि वहां पर रोल, चाहे वह सी.बी.आई. का हो, चाहे कोर्ट का हो, चाहे गवर्नर्मेंट का हो, थोड़ा सा पोलिटिकलाइज़ हो गया और पर्सनल हो गया। इस फॉड्यूर रैकेम की वजह से ही आज हाउस में यह डिवेट हो रही है कि बिहार की स्थिति क्या है? बिहार की स्थिति पर अगर आप गौर करें और खास तौर से इस फॉड्यूर रैकेम को, तो यह स्थिति 1977 से चल रही है। जिसमें चार मुख्य मंत्री बदले जा चुके हों, और उसके पहले भी एक-दो मुख्य मंत्रियों के नाम हो, उनके साथ एक दूसरा रोल और एक मुख्य मंत्री के साथ एक दूसरा रोल, तो इस पर भी हमें जरा गौर करना चाहिए। सी.बी.आई. के रवैये से यह बात जाहिर होती है कि अकेले लालू प्रसाद यादव को यह कहना कि वे इन चीजों के लिए जिम्मेदार हैं और उन पर जो चार्जशीट की गई 124 लोगों के साथ, और सबके साथ एक सा रवैया होता और एक तरीके से गिरफ्तार करने का रवैया होता तो मैं समझता कि यह बात ईमानदारी के साथ हो रही है। आज सी.बी.आई. का जो रोल उनकी गिरफ्तारी के संबंध में रहा है, खास तौर से जब कि वे एक आदेश के चीफ मिनिस्टर थे और बहौसियत चीफ मिनिस्टर के अगर वह बयान दे रहे हैं कि मैं नहीं समझता हूं कि चाहे उसमेंक हाई कोर्ट का कोई रोल

i [ ] Transliteration in Arabic Script

रहा हो या सी.बी.आई. और हाई कोर्ट में कुछ बातचीत रही हो या कुछ भी कहा है, जिस तरीके से उनको गिरफ्तार किया गया, मैं नहीं समझता हूं कि किसी चीफ मिनिस्टर को इस तरह से गिरफ्तार करना चाहिए। हमारे गृह मंत्री जो यहां पर मौजूद है, मैं उनसे साफ तौर से पूछना चाहूँगा कि ऐसी कौन सी मजबूरियां थीं और ऐसे कौन से हालात बने थे जिनकी वजह से लालू जी को इस बुरे तरीके से और बढ़ेगे तरीके से गिरफ्तार किया गया? इससे न देश का और न ही प्रदेश का कोई पोलिटिकल माहौल सही होगा। आज जो बिहार के हालात बने हुए हैं, जहां तक सवाल जनता दल की गवर्नर्मेंट का था, जनता दल की गवर्नर्मेंट ने वहां पर हमेशा लॉ एंड आर्डर बेहतर करने की कोशिश की और वहां पर कभी भी कोई कम्युनल रॉयटर्स नहीं होने दिया जिसकी वजह से लॉ एंड आर्डर वहां पर बिगड़े, वाहे वह सीतामढ़ी का हो या और कोई हो और यही नहीं कम्युनल हारमोनी के लिए जो काम वहां की गवर्नर्मेंट ने किया, उस पर भी हमें जरा गौर करना चाहिए और वह दिन भी याद करना चाहिए जिस दिन एल. के. आडवाणी साहब को लालू जी ने गिरफ्तार किया था, तब भी प्रदेश में कोई बात नहीं हुई थी। ये तमाम बातें थीं, जो पक्ती रही और आज हालात ऐसे बन गए कि जब उनको गिरफ्तार किया गया और ऐसा भी नहीं था कि वे यहां से भागकर जा रहे थे और नेपाल में जाकर शरण ले रहे थे। ठीक है, गिरफ्तारी उनकी होनी थी, और गिरफ्तारी के लिए उन्होंने कह दिया था कि मैं रिजाइन करूँगा और रिजाइन उन्होंने कर भी दिया और उसके बाद कहा कि कल मैं खुद जाकर गिरफ्तार होऊँगा। लेकिन रात में जो माहौल, जिस तरह से सी.बी.आई. ने बिगड़वाया, इस पर भी हमें गौर करना चाहिये।

यह लॉ एंड आर्डर क्यों बिगड़ा? जहां लॉ एंड आर्डर बिगड़ने का सवाल है, अगर यह बिहार में खराब है तो चाहे वह महाराष्ट्र हो, चाहे राजस्थान हो, चाहे यू.पी. हो, यहां भी लॉ एंड आर्डर कोई ऐसा नहीं है। जिसके बारे में आप यह कह सकें कि वहां की सरकारे बड़ी ईमानदारी के साथ काम कर रही हैं और वहां की सरकारें सही तरीके से काम कर रही हैं ... (व्यवधान)...

**श्री शिव चरण सिंह :** गलत बात आप क्यों कह रहे हैं ... (व्यवधान) ... आप गलत बात कह रहे हैं ... (व्यवधान) ...

**उपसभाधक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** वसीम अहमद साहब, अब आप समाप्त कोजिए, बहुत-बहुत शुक्रिया ... (व्यवधान) ...

**श्री वसीम अहमद :** मैं समाप्त करन चाह रहा हूँ  
... (च्यवधान)...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** अब वाइंड-अप कर लीजिए, बहुत-बहुत शुक्रिया।

**श्री वसीम अहमद :** ठीक है, वाइंड-अप तो आपने कर ही दिया है। धन्यवाद।

**श्री संजय निरूपम :** उपसभाध्यक्ष महोदय, बिहार की वर्तमान स्थिति पर आज यहां चर्चा चल रही है। उसमें अपनी बात रखने का आपने जो मौका मुझे दिया है, उसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। महोदय, मैं पिछले 3 दिनों तक बिहार में था, पटना में था और कल शाम ही वापस आया हूँ महोदय, जिस दिन मैं पटना पहुँचा था, उसके एक दिन पहले बिहार बदं था और उसकी खबरें अखबारों में हमने पढ़ी थीं। अखबारों से पता चला कि रूलिंग राष्ट्रीय जनता दल द्वारा आयोजित इस बदं के दौरान दहशत और भय का माहौल था। श्री सतीश अग्रवाल जी ने कहा कि वहां वकीलों से उठक-बैठक कराई गई। उनकी जानकारी अधूरी है, उसको मैं पूरा करना चाहता हूँ। वकीलों से सिर्फ उठक-बैठक नहीं कराई गई बल्कि उनके सिर फेंडे गए और फूटे हुए सिर लेकर जब वे वकील हाईकोर्ट पहुँचे, तब जाकर कोर्ट ने इंटरपीयर किया। उस बदं के दौरान प्रशासन की भूमिका क्या रही, यह भी विचारणीय बात है। महोदय, 2 बजे तक प्रशासन पूरी तरह से निष्क्रिय था और उन लोगों ने आर.ए.एफ. बहाल करने के बारे में कोई निर्णय नहीं लिया था। दो बजे जब हाई कोर्ट के जज ने यह आदेश जारी किया, चीफ सेक्रेटरी और डी.जी.पी. को बुलाकर डांटा गया कि जल्दी से आर.ए.एफ. बहाल कीजिए वरना हालत खराब हो जाएगी, जनजीवन अशांत हो जाएगा, तब जाकर आर.ए.एफ. बहाल की गई। इस बारे में वहां के अखबारों में एक इंटरव्यू छपा है, उसे मैं पढ़कर सुना रहा हूँ।

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** पढ़कर मत सुनाइए। आप अपनी भाषा में थोड़ा सा बता दीजिए।

**श्री संजय निरूपम :** पंक्ति यह है कि "A partisan district administration today gave itself up to the Rashtriya Janta Dal "goon squads" as they went about using unprecedented terror tactics to enforce what people billed as goonda curfew in the State capital".

यह गुड़ां कफर्य क्यों हुआ? इसलिए हुआ क्योंकि प्रशासन वहां पर विफल हो गया था। महोदय, हमने सी. बी. आई. की भूमिका के ऊपर शक किया, अदालत की भूमिका के ऊपर शक किया लेकिन प्रशासन की जो भूमिका रही है, बिहार में पटना प्रशासन की जो भूमिका रही है, उसके ऊपर कोई शक नहीं कर रहा है। प्रशासन वहां कैसे फेल हो रहा है, इसका एक उदाहरण तो बदं के दौरान सामने आया है जो मैंने आपको बताया है। दूसरा उदाहरण यह है कि पिछले महीने पटना में जबरदस्त बारिश हुई। यह कहा गया कि पिछले 15 सालों का रिकॉर्ड टूट गया, पूरा पटना शहर पानी से भर गया। राजन्द्रनगर और कदम कुआं की सड़कों पर जहां पहले गाड़ियां चलती थीं, नाव चलने लगी। पूरा प्रशासन वहां था, पुलिस थी, लालू प्रसाद यादव मुख्यमंत्री थे, वे राजधानी में थे, मुख्यमंत्री निवास में थे लेकिन किसी का ध्यान उस समस्या की ओर नहीं गया। तब कोर्ट ने इसमें दखल दिया और आदेश जारी किया कि जितनी जल्दी हो सके सिविल ऐडमिनिस्ट्रेशन ऐक्टिव हो और पानी निकालने की व्यवस्था की जाए। उसके बाद प्रशासन सक्रिय होता है।

महोदय, प्रशासन की अकर्मण्यता का तीसरा सबूत तब सामने आया जब सी.बी. आई. की टीम लालू प्रसाद यादव को अरेस्ट करने गई। वहां पुलिस एस.एस.पी. जो कि एक पुरुष है और डी.एम.जे कि एक महिला है, वे लोग वहां मोजूद थे। उन्होंने कहा कि अगर लालू जी को हाथ भी लगाया तो ऐनकाउंटर हो जाएगा। यह तो प्रशासन का रवैया है। ऐसी स्थिति में अगर सी.बी. आई. कोर्ट के पास जाती है और कोर्ट से आदेश मिलता है कि जाइए आर्मी से मदद लीजिए तो इसमें गलत क्या है?

**श्री वसीम अहमद :** महोदय, मेरा एक प्लाइंट आफ आर्डर है।

हमारे साथी ने यह कहा है कि एनकाउंटर हो जाएगा। यह बात किसने कही हैं?

**श्री संजय निरूपम :** अखबारों में छपा है। जो खबर छपी है मैं आपके सामने रख रहा हूँ महोदय, मैं यहां पर एक दृष्टांत रखना चाह रहा हूँ। हमारे देश के पूर्व उप सेनाध्यक्ष जनरल एस. के. सिन्हा है, वह पटना में रहते हैं। उनकी क्रेडिबिलिटी के ऊपर कोई शक नहीं किया जा सकता। उन्होंने सन्डे के टाइम्स आफ इंडिया में एक आर्टिकल लिखा है और उस आर्टिकल में बताया है कि आर्मी की मदद लेने में गुनाह क्या है और अच्छाई क्या है। उनके विचार में बताना चाहूँगा आपको।

"Our law does not provide for the judiciary to directly seek the assistance of the army. Yet strange things happen in our country. Not long ago, Mr. Mulayam Singh Yadav, when he was the Chief Minister of UP, organised a State bandh, despite the then Prime Minister and the then Home Minister publicly urging him not to-do so. During that bandh, some of his party toughs finding Allahabad High Court functioning on the day of the bandh, chose to disturb the proceedings there. They even fired a few shots and ransacked the chamber of the Chief Justice in his presence. The police accompanying them remained mute spectators. The Chief Justice summoned military assistance on the telephone and the local military commander in Allahabad Cantonment responded immediately. He promptly sent soldiers to the High Court who dispersed the vandals. Although this action may not have been according to the prescribed procedure or law the action was fully justified."

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** अब समाप्त करिए, समय हो गया।

**श्री सजंग निरूपम :** महोदय, मैं उसी मुद्दे पर आ रहा हूँ। महोदय, मेरे कहने का मतलब यह है कि वह प्रक्रिया गलत हो सकती है। सी.वी.आई.बीगेर केन्द्र सरकार से सम्पर्क किए दानापुर में जो हमारे ब्रिगेडियर बैठते हैं, लेकिन वहाँ स्थिति कर ली हो, यह बात बलत हो सकती है। लेकिन वहाँ स्थिति ऐसी थी कि सेना की मदद लेना जरूरी था। महोदय, हमारा कहना यह है कि बिहार में जबर्दस्त दुर्गति हो गई है। मेरे रिश्तेदार मुझसे पूछते हैं कि बिहार का क्या होगा। मेरे दोस्त के पिता जो 80 साल की उम्र में हैं वह पूछते हैं कि कि अब बिहार का क्या होगा। ऐसी स्थिति में हम बिहार सरकार के समर्थन में, बिहार सरकार ने जो भ्रष्टाचार और लूटपाट का माहौल पैदा किया हुआ है उसके समर्थन में कुछ बातें करें, यह हम सबके लिए बहुत शर्म की बात है। महोदय, मैं माननीय गृह मंत्री जी सामने अपनी बात रखना चाहूँगा हूँ कि हम धारा-356 लागू करने के पक्षधर नहीं हैं। हम चाहते हैं कि जो चुनी हुई सरकार है उसकी रक्षा हो और उनको बचाया जाए। लेकिन बिहार एक अपवाद है। बिहार ऐसी स्थिति में है कि केन्द्र सरकार को वहाँ दखल देनी पड़ेगी। वहाँ पूरी तरह एक

फाइर्नेसियल एमरजेंसी की स्थिति पैदा हो गई है। फाइर्नेसियल बैंक्रप्ट हो गई है, टोटल बैंक्रप्ट हो गई है। मेरी बड़ी बहन जिसकी 50 साल की उम्र है वह वहाँ स्कूल ठीचर है बी. एन. कॉलेज में, उसको 18 महीने से सेलरी नहीं मिली है। ट्रांसपोर्ट कमीशन के 250 ऐसे कर्मचारी हैं जिनको दो-दो साल की सेलरी नहीं मिली है तथा कुछ ने सुसाइड कर लिया। वहाँ पर घोटाले ही घोटाले हो रहे हैं। जिस डिपार्टमेंट में हाथ डालिए घोटाला मिल जाएगा, करण्णान मिल जाएगा। ऐसी स्थिति में मुझे लगता है कि वहाँ अगर धारा 360 का सहारा लेकर के, सहयोग लेकर के अगर फाइर्नेसियल इमरजेंसी लागू करदी जाए तो ज्यादा बेहरत होगा।

**श्री रामदेव भंडारी (बिहार) :** मैं भी माननीय अग्रवाल साहब की प्रशंसा करना चाहता हूँ कि उन्होंने अपने भाषण की शुरूआत बड़ी ही अच्छे ढंग से की थी। बिहार के कुछ महान नेताओं की चर्चा की, गौरवशाली परम्पराओं की चर्चा की और उन्हीं महान नेताओं में उन्होंने श्री जगजीवन बाबू की भी चर्चा की। मैं उनसे यह कहना चाहता हूँ कि जगजीवन बाबू इस देश के प्रधान मंत्री नहीं बन सके और इसका संबंध मैं बिहार से जोड़ रहा हूँ। महोदय, बिहार में वर्षों से सामन्ती व्यवस्था है। जर्मीदारी व्यवस्था है। 5 से 10 प्रतिशत लोगों के हाथ में सत्ता, धन, सम्पत्ति, शासन सब कुछ उन्हीं के हाथ में वर्षों-वर्षों से रही है।

और 90 प्रतिशत आदमी सत्ता से महरूम, धन से महरूम, सामाजिक न्याय से महरूम, शिक्षा से महरूम थे। ऐसे समय में जब डा. राम मनोहर लोहिया, जय प्रकाश नारायण, कर्पूरी ठाकुर के नेतृत्व में वहाँ संघर्ष हुआ – एक नाई परिवार में, हजामत बनाने वाले परिवार में कर्पूरी ठाकुर पैदा हुए और वह बिहार के मुख्य मंत्री बने। मगर यह सामन्तवादी लोग, यह जर्मीदार लोग जिनका पूरा नियंत्रण शासन और प्रशासन पर था, जिनके सामने 90 प्रतिशत लोग गुलामी की तरह रहे, उनकी बहु-बेटियों की बिहार में कोई इज्जत नहीं थी। इन 10 प्रतिशत लोगों ने 90 प्रतिशत लोगों को गुलाम की तरह रखा। इनके परिवारों की बहु-बेटियों की इज्जत को इज्जत नहीं रहने दिया। जब कर्पूरी ठाकुर बिहार के मुख्य मंत्री बने तो साल, डेढ़ साल, दो साल कर्पूरी ठाकुर को नहीं चलने दिया। पहली बार बिहार का मुख्य मंत्री जब लालू प्रसाद यादव 1990 में बना तो 125 की संख्या मंत्री रहा। और चाहता हूँ कि शैड्यूल्ड कास्ट का आफिसर, अच्छे से अच्छा आफिसर, शैड्यूल्ड ट्राइब का आफिसर, बेकवार्ड

क्लास का आफिसर जो इधर-उधर पड़ा हुआ था, उसको उन्होंने कलेक्टर, बनाया, उसको उन्होंने एस.पी.बनाया, अच्छे से अच्छे पदों पर रखा और जिन लोगों ने बरसों से बिहार को लूटा था, उनको इधर-उधर भेज दिया। यह उनको बर्दाशत नहीं हुआ। वह जिस बड़े परिवार से आते थे, उनको भी बर्दाशत नहीं हुआ और लालू प्रसाद यादव के खिलाफ साजिश शुरू हो गयी। फिर भी 1995 के चुनाव में लालू प्रसाद यादव की पार्टी के 168 एम.एल.ए. जीतकर आए और विशाल बहुमत से लालू प्रसाद यादव फिर से बिहार के मुख्य मंत्री चुने गये। मगर साजिश होनी थी। 1977 में जो फोड़ेर स्कैम शुरू हुआ, 1990 से उसकी जांच शुरू हुई। यह अच्छी बात है कि सी.बी.आई. जांच कर रही थी, कोर्ट उसको देख रही थी। निष्पक्ष रूप से उसकी जांच होनी चाहिए। सी.बी.आई. पर छोड़ देना चाहिए था, कोर्ट पर छोड़ देना चाहिए, पर छोड़ देना चाहिए था, कोर्ट पर छोड़ देना चाहिए था कि निष्पक्ष रूप से जांच करें। मगर महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि सी.बी.आई. को प्रभावित करने के लिए, कोर्ट को प्रभावित करने के लिए हमारे विरोधी दल के भाइयों ने लगातार बिहार में कानून और व्यवस्था की स्थिति को बिगाड़ने का प्रयास किया, आन्दोलन किये, आन्दोलन के अलावा खुन-खराबे की नौबत पैदा की और आज कहते हैं कि बिहार की कानून और व्यवस्था खराब है। मैं अग्रवाल साहब को सुन रहा था। यह स्वतंत्रता की पंचासर्वी वर्षगांठ है। स्वर्ण जयंती वर्ष हम मना रहे हैं। बिहार ने इस स्वर्ण जयंती वर्ष में एक महिला मुख्य मंत्री इस देश को दी इसके लिए आपको, बिहार की जनता को धन्यवाद देना चाहिए और आप उसकी आलोचना कर रहे हैं। वह एक पिछड़े वर्ग की महिला है। अगर आज वह किसी ऊंची जाति की महिला होती वह महिला पिछड़े वर्ग की महिला है - लालू प्रसाद यादव की पत्नी के नाते क्या उसको कोई नागरिक अधिकार प्राप्त नहीं है? सिर्फ लालू प्रसाद यादव की पत्नी होने से उसका नागरिक अधिकार छिन गया है? नहीं महोदय, ऐसा नहीं है। यह उस नारी के प्रति, पूरी नारी जाति के प्रति अपमान है। हम यहां चर्चा करते हैं कि हम 33 प्रतिशत आरक्षण देने जा रहे हैं और अगर बिहार में कोई नारी वहां की मुख्य मंत्री बनती है तो उसकी हम यहां आलोचना करते हैं। कहते हैं कि शिक्षित नहीं है, गांव से आयी है। क्या गांव की महिला को ऊंची जगहों पर जाने का अधिकार नहीं है? है, महोदय। मेरे पास समय कम है इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि यह बड़ी साजिश हो रही है और साजिश के आधार पर - जब उस केस में इतने सारे ऐक्यूज़ुड हैं तो क्यों लालू प्रसाद यादव के संबंधी के यहां

मिट्टी खोदी जाती है? उसके घर में जाकर उसके दरवाजे पर मिट्टी खोदी जाती है। और जब कोई सबूत लालू प्रसाद यादव के खिलाफ नहीं मिलता है तो साजिश तैयार करते हैं। साजिश एक ऐसा शब्द है जो किसी के खिलाफ भी तैयार किया जा सकता है। महोदय, उस दिन माननीय गृह मंत्री जी बयान दे रहे थे। मैं उसमें से ज्यादा नहीं, केवल दो-तीन लाइनें पढ़ना चाहता हूं। “केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरों के अधिकारियों द्वारा दानापुर में स्थित सेना के स्थानीय अधिकारियों से किया गया उपर्युक्त अनुरोध निर्धारित प्रक्रिया का अस्पष्ट उल्लंघन था और वह उनके अधिकार से पूर्णता परे था।” मैं दूसरी लाइन पढ़ना चाहता हूं कि स्थापित प्रक्रिया स हटकर की जाने वाली किसी कार्रवाई के परिणाम गंभीर तथा अवांछनीय हो सकते हैं। इस अनधिकृत कार्रवाई से विस्फोटक प्रक्रिया का पालन किए बिना सेना की सहायता मांगने पर केन्द्रीय अन्वेषण से ले लिया है। सरकार ने स्वीकार किया है कि गलती हुई है। मैं सरकार से मांग करता हूं कि अब उनके खिलाफ कार्रवाई करने में देर क्यों हो रही है? जब लालू यादव को गिरफ्तार करने में सीबीआई दो-चार घंटे का समय नहीं दे सकती थी सीरेण्डर करने के लिए तो उस सीबीआई के अधिकारी के खिलाफ जिसने सेना को बुलाने का प्रयास किया कार्रवाई करने में क्यों देर हो रही है? मैं अनुरोध करता हूं कि उस सीबीआई के अधिकारी को गिरफ्तार किया जाए और उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाए। यहीं मैं गृह मंत्री जी से अनुरोध करना चाहता हूं बहुत-बहुत धन्यवाद।

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वदी) :** भंडारी जी धन्यवाद। श्री शत्रुघ्न सिन्हा।

**श्री शत्रुघ्न सिन्हा (बिहार) :** उपसभाध्यक्ष महोदय, आजादी की 50वीं साल गिरह पर सबसे बड़ी राजनीतिक, शर्मनाक दुर्भाग्यपूर्ण, अफसोसनाक घटना एक बार बिहार में हुई। आजाद हिन्दुस्तान में पहली बार किसी मुख्य मंत्री के पद पर रहते-रहते चार्जशीट हो जाना और करीब-करीब पद पर रहते हुए गिरफ्तार हो जाना पहली बार बिहार में हुआ है। मैं अतीत में नहीं जाऊंगा। बहुतों ने जो बातें की, मैं उन बातों को नहीं दोहराऊंगा। जो सोमपाल जी ने, भंडारी जी ने और यादव जी ने कहा उसका मैं रेपिटेटिव भी नहीं करूंगा। इसलिए मैं अतीत में नहीं जाते हुए यह कहना चाहता हूं कि यह जो गिरावट बिहार में आई है, चूंकि मैं बिहार से आता हूं और बहुत लोगों की नजरों में मैं बिहारी बाबू भी हूं मुझे

बहुत दर्द होता हैं कि बुद्ध का प्रदेश बिहार के चन्द\* की वजह से बुद्धओं का प्रदेश बनाकर पूरे देश देश में पेश किया जा रहा है। मैं किसी व्यक्ति विशेष के खिलाफ बातें नहीं करता हूँ और मेरे विरोधी भी इस बात की सराहना करते हैं ....(व्यवधान)...

**श्री एस०एस० आहलुवालिया :** महोदय, यह \* और बुद्धों क्या कह ... (व्यवधान)...

**श्री सोमपाल :** महोदय, किसी ने नाम को इस तरह से कहना यह इस सदन की मर्यादा नहीं है। ... (व्यवधान)...

**श्री नरेश यादव :** आप उसको हटा दीजिए। ... (व्यवधान)...

**श्री शत्रुघ्नि सिन्हा :** मैंने लालू नहीं कहा है\* कहा है। ... (व्यवधान)...

**श्री रामदेव भंडारी :** आप लगा ही क्यों रहे हैं ... (व्यवधान)

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** \*वर्ड कार्यवाई से हटा दिया जाए। ... (व्यवधान).... आप बैठिए। आप बैठिए।

**श्री सोमपाल :** इस तरह के शब्द उनको नहीं कहने चाहिए, शब्द वापस लिया जाए। ... (व्यवधान)...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** सोमपाल जी, आई हैव आलरेडी डिलीटि इट ... (व्यवधान)...

**श्री रामदेव भंडारी :** वहां पर लालू का राज है, \*का नहीं ... (व्यवधान)...

**श्री सोमपाल :** लोगों के चुने हुए प्रतिनिधियों के लिए इस तरह के अशोभानीय शब्द प्रयोग करते हुए शत्रुघ्नि सिन्हा बाबू आप अच्छे नहीं लगते हैं।....

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** सोमपाल जी, इस तरह के जो शब्द है वह निकाल दिए जाएंगे। ... (व्यवधान)...

**श्री शत्रुघ्नि सिन्हा :** सोमपाल जी, मैं आपकी बहुत इज्जत करता हूँ मैंने लालू नहीं कहा है \* कहा है\*की वजह से ... (व्यवधान).... और वह भी चन्द \*की वजह से कहा है। ... (व्यवधान)...

**श्री सोमपाल :** यह एक तरह का अशोभनीय शब्द है। ... (व्यवधान)...

**श्री एस.एस. अहलुवालिया :** कौन है ... (व्यवधान).... आप भी बिहार को रिप्रेजेंट करते हैं, मैं भी करता हूँ ... (व्यवधान)...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** मैंने डिलीट करने के लिए कह दिया है। ... (व्यवधान).... मैंने डिलीट करने के लिए आदेश दे दिया है। आप आगे बढ़िए ... (व्यवधान)...

**श्री संजय निरूपम :** बिहार का जो लोग समर्थन करते हैं वह ... (व्यवधान)...

**श्री एस. एस. अहलुवालिया :** बिहार की प्रतिभा पर आपने प्रश्न-चिह्न लगा दिया है... (व्यवधान).... बिहार की प्रतिभा पर कलंक का टीका लगा दिया है ... (व्यवधान)...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** अहलुवालिया साहब आप तसरीफ रखिए।

**श्री शत्रुघ्नि सिन्हा :** मैं आपके दबाने से इम्प्रेस नहीं हो जाऊँगा। ... (व्यवधान).... मैंने बिहार के बारे में कोई टीका-टिप्पणी नहीं की है। ... (व्यवधान).... आप अपनी इंपोरेंट्स के लिए बात न करें ... (व्यवधान)...

**श्री रामदास अग्रवाल:** चन्द शब्द का उपयोग किया है। ... (व्यवधान)...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** अग्रवाल जी आप नहीं बोलिए। ... (व्यवधान)...

**श्री शत्रुघ्नि सिन्हा :** आप वे शाउट करके मुझे नहीं दबा सकते हैं ... (व्यवधान).... आप गलत जगह हैं, आपको राजबब्लर भी चुप करा चुके हैं, मैं भी चुप करा सकता हूँ ... (व्यवधान)...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** आप व्यक्तिगत बातें नहीं करिए ... (व्यवधान)...

**श्री संजय निरूपम :** सच इनको कड़वा लगता है इसलिए इनको बैचेगी है ... (व्यवधान)...

**श्री शत्रुघ्नि सिंहा :** इनको बहुत कड़वा लग रहा है। इनका न कोई बेस है न कोई जगह है। मैं यह कहना नहीं चाह रहा हूँ ... (व्यवधान)...

**श्री एस.एस. अहलुवालिया :** इनका बसे क्या है ... (व्यवधान)...

**श्री शत्रुघ्नि सिन्हा :** आपके चिल्लाने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा। ... (व्यवधान)...

\* Expunged as ordered by the Chair.

\* Expunged as ordered by the Chair.

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** आप बैठिए ...**(व्यवधान)**...

**श्री शत्रुघ्नि सिन्हा :** आप बहुत चिल्ला चुके, आप खाम खावा ह पंगा ले रहे हैं। आप बैठ जाइए।**(व्यवधान)**...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** देखिए, मैंने बराबर आपसे निवेदन किया है**(व्यवधान)**...

**SHRI S.S. AHLUWALIA:** He should withdraw those words. What is this? I will not allow him to speak like this. Let him show his base. Let him show his base. Our family has sacrificed a lot during the Freedom Struggle. What did you sacrifice? You are born in Bihar. You are living in Bihar. We have sacrificed a lot for Bihar. What are you talking?

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** आप एक दूसरे पर व्यक्तिगत आक्षेप न करें। आप अपनी बात कहिए ...**(व्यवधान)**... अहलुवालिया साहब, आप बैठिए, ...**(व्यवधान)**... मैं उसको देख लूंगा। चलिये शुरू करिये ...**(व्यवधान)**... आपने क्या परसनल कहा, क्या उन्होंने कहा वह मैं देख लूंगा ...**(व्यवधान)**...

**SHRI S.S. AHLUWALIAj** What does he mean by...**(व्यवधान)**... बैसलैस बोल रहे हैं**(व्यवधान)**... ये बेस हैं इनका ?**(व्यवधान)**...

**श्री नारायण प्रसाद गुप्ता :** आपका कोई बेस नहीं है, मैं दोबारा दोहराता हूं। क्या कार्रवाही होती है मेरे खिलाफ ...**(व्यवधान)**....

The Congress is a baseless party in Bihar.

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** नारायण प्रसाद जी, हम यहां पर अहलुवालिया साहब को या किसी व्यक्ति को डिस्कस नहीं कर रहे हैं ...**(व्यवधान)**... हम किसी व्यक्ति को डिस्कस नहीं कर रहे हैं। अब आप बैठ जाइये ...**(व्यवधान)**... किसी व्यक्ति को डिस्कस नहीं कर रहे हैं। वह मैं देख लूंगा आप अपनी बात कहिये। जो व्यक्तिगत आपने कुछ कहा, उन्होंने कुछ कहा, वह मैं देख लूंगा किसको दूर करना है, वो मैं कह चुका हूं।**(व्यवधान)**... क्योंकि होम मिनिस्टर साहब को ...**(व्यवधान)**...

**श्री नारायण प्रसाद गुप्ता :** ..... \* के बारे में कि \* कोई असंसदीय शब्द है क्या? हिन्दी में ये ...**(व्यवधान)**...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** नहीं आप बैठ जाइये, गुप्ता जी।

**श्री शत्रुघ्नि सिन्हा :** उपसभाध्यक्ष जी, मैं खुद भी जब भूतपूर्व और अब अपनी हरकतों से शायद अभूतपूर्व मुख्य मंत्री, जब वे शासन में आये तो.....

**THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF CIVIL AVIATION AND THE MINSTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN):** Just one minute, Sir. The Home Minister had already requested the Deputy Chairman yesterday — and permission was given — that he would go at 4 o' clock. Would you please consider it? The Minister of State for Home is here. The debate can continue. If you could excuse the Minster...

**THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI):** I think in these circumstances we may allow the Home Minister to go for his next assignment. The Minister of State for Home will be here. The reply will be given tomorrow. So, we can continue the debate. That is the sense of the House. The hon. Home Minister can go.

**THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI INDRAJIT GUPTA):** I will come tomorrow, Sir.

**THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI):** Yes, because you have another assignment now at 5.15 (*interruptions*) It takes some time to reach a place. We should not be so finicky about these things.

**श्री शत्रुघ्नि सिन्हा :** उपसभाध्यक्ष महोदय, मेरे खुद कुछ लोगों ने यह बात पसन्द नहीं की थी, लैकिन जब लालू यादव मुख्य मंत्री बनकर आये थे तब मैंने उनकी सराहना की थी और मैंने अखबारों में बयान भी दिया था कि गरीब का बेटा, जिसने गुरबत देखी है, जिसने गरीबी

---

\*Expunged as ordered by the Chair.

देखी है, वह जनता के दुखदर्द को ज्यादा अच्छी तरह समझेगा और उसे भरपूर मौका मिलना चाहिये। मैंने खुद कहा था कि मेरे भी कुछ लोगों को यह बात पसन्द नहीं आई थी और नव भारत टाइम्स व कई अन्य अखबारों में मैंने बयान भी दिया था कि यह आदमी जरूर बहुत भला करेगा लेकिन आने के बाद क्या हुआ? नारों की राजनीति, गपोड़संखी, बड़े-बड़े वायदे, इतने-इतने कांड सात साल में हुए मैं उस पर नहीं जाना चाहता अपराध क्या हुए? पैतीस हजार हत्याएं हुई, यादव जी ने कहा है। लेकिन क्या कोई एक भी क्षेत्र हैं जहां पर कहा जा सकता है कि इजाफा हुआ हों? हॉस्पिटल, स्कूल्स, सड़कें, प्रैकेपिटा इनकम, बिजली सैकटर खेतों में ला एंड आर्डर प्रशासन, हर तरफ गिरावट। और जो यह फोड़र स्कैम चल रहा है, इसका जिक्र हुआ है। ये तो टिप ऑफ दि आईशा बर्ग है। अभी तो बहुत सारे स्कैम हैं। जैसे आप टेलीफोन करते हैं और लाइन बिजी आती है। और एक रिकांडिंग आती है कृपया आप इंतजार कीजिये, आप लाइन में हैं। अभी तो इस फोड़र स्कैम के बाद बिटुमिन स्कैम है, लैंड स्कैम है, हॉस्पिटल स्कैम है, मैडिसन स्कैम है, हॉस्पिटल इच्चपमैंट स्कैम है, जगल स्कैम है, कोल स्कैम है। स्कैम ही स्कैम है और इस दौरान जितने ब्रष्टाचार हुए वे भी किसने किये?

जिसने अपने आप को गरीबों का मसीहा बना कर प्रोजेक्ट किया। किस ने किया? जिसने सामाजिक समता और सामाजिक न्याय का नारा दिया और समाज में इतनी विष्ठता घोल दी कि आज बिहार में जितनी सेनाएं हैं, आज बिहार में जितने मार-काट हो रहे हैं और ऊपर से तुर्य यह कि कहते हैं पटना की सड़कों को किसी हीरोइन के गाल की तरह चमका देंगे। यह जो ब्रष्टाचार हुआ है, अगर उसका 10 प्रतिशत पैसा भी बिहार के विकास में लगाया जाता तो हीरोइन के गाल की तरह तो नहीं, कम से कम लालू यादव के बाल की तरह सफेद चिकना जरूर हो जाती वहां की सड़के लेकिन ऐसा कुछ नहीं किया गया। आज जब सामने बात खुल कर आई है सी.बी.आई.जो सरकार की एजेंसी है। लोअर कोर्ट से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक बेल रिजेक्ट हुआ है ऊपर से यह नारा उनका और उनके समर्थकों का कि वह निर्दोष है? कैसे निर्दोष है? तालीकपतान को दो गाली भी कपतान को।

तू इधर-ऊधर की न बात कर, यह बता कारवां क्यों लुटा, मुझे राहजनों से गिला नहीं तेरी राहबली का सवाल है।

तुम कपतान हो, जिम्मेदारी तुम्हारी है, जवाबदेही तुम्हारी है, तुम अकाउंटेबल हो, जवाब देना पड़ेगा, बच नहीं

सकते। माननीय सदस्य अहलुवालिया जी कह रहे थे और भी किसी सदस्य ने कहा कि वह निर्दोष है और आदमी निर्दोष है जब तक उसका दोष साबित नहीं हो जाता। मैं बिल्कुल इस बात से सहमत हूं। आदमी निर्दोष है जब तक उसका दोष साबित नहीं हो जाता। तो फिर अगर यह मापदंड है तो उसमें तमाम आई.ए.एस. आधिकारियों को, बाकी पदाधिकारियों को बाकी लोगों को क्यों गिरफ्तार करके इतने महीनों से रखा गया है? फिर सब को छोड़ दिया जाए। देश में जितने भी कैदी आज जेलों में पड़े हुए हैं जिनके मामले विचाराधीन हैं, जिनके ऊपर मुकदमा चल रहा है, उन्हें भी छोड़ देना चाहिये। Two sets of laws for two sets of people सी.बी.आई. के डायरेक्टर को बदला जाता है, जिस कारण से बदला जाता है? लोगों को पता है और नया डायरेक्टर आता है और आते ही पहला बयान देता है कि हम पोलिटिशियंस और ब्यूरोफ्रेट दूध के धुले हैं? दो लॉज होंगे दो तरह के लोगों के लिए। यह यहां पर हॉड इन ग्लब्ज वाली बात है। सेंटर के प्रोटेक्शन जैसे हमारे अंसारी जी ने कहा था मजबूरी हैं। मजबूरी समझ रहे हैं लेकिन इससे आप क्या संदेश दे रहे हैं देश को? हमारी संतानों को आप क्या बता रहे हैं? यह बता रहे हैं कि यह पोलिटिशियन है इसलिए उनके लिए बहुत सहानुभूति है, मैं जानता हूं अगर मैं लालू यादव की जगह होऊं, एज ए कलाकार मुझे बहुत दुख हुआ, मैं यह सोच रहा था कि उनके बच्चों पर क्या गुजर रही होगी, उनकी पत्नी पर क्या गुजर रही होगी। ... (व्यवधान)...

**श्री रामदेव भंडारी :** आपको क्यों चिंता हो रही है? ... (व्यवधान)...

**श्री शत्रुघ्नि सिन्हा :** मैं कलाकार के नाते बोल रहा हूं। ... (व्यवधान)...

**श्री रामदेव भंडारी :** उनके बच्चों की चिन्ता इनको क्यों है? ... (व्यवधान)...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** भंडारी जी, प्लीज ... (व्यवधान) ... ठीक है रहने दीजिए ... (व्यवधान)...

**श्री शत्रुघ्नि सिन्हा :** शायद इसी बहाने वह बात कहना चाह रहे हैं मुझे से। मुझे इसकी कोई चिन्ता नहीं है, आप कह सकते हैं, आप बड़े भाई हैं। आप जो कहें, कह सकते हैं, लेकिन मुझे इन्सान के नाते, कलाकार के नाते बहुत दुख हुआ कि उनके परिवार पर क्या

गुलजार रही होगी। लेकिन साथ साथ एक इन्सान के नाते यह भी महसूस होता है कि इतने सारे परिवारों के साथ क्या गुजरी होगी जिन पर अत्याचार हुआ है, जुल्म हुआ है। जो भ्रष्टाचार और अनाचार के शिकार हुए हैं, दुराचार के शिकार हुए हैं। आज बिहार में आतंक है। जिस दिन बिहार बदं हुआ, मैं उस दिन बिहार में ही था। यह स्टेट स्पॉर्सड बदं था। जिस तरह से लोग बाहर आए, ट्रेस को रोका गया, दुकानों को बंद करवाया गया, जिस तरह वहां का प्रशासन त्रस्त है, भयभीत है, अंग्रेजी में कहते हैं मोस्ट कोआप्रेटिव ब्यूरोफ्रेसी इन बिहार। कोआप्रेटिव का डेफिनिशन क्या है, उन्हें बैठने के लिए कहो तो लेट जाते हैं। यह है कोआप्रेटिव वहां के। डी.जी. पुलिस, चीफ सेक्रेटरी को एक्सटेशन ले कर रिटायरमेंट के कगार पर हैं और जो हाई कोर्ट में उन्होंने ऐफिडेविट दिया कि हां हमारे पास तैयारी है अगर किसी टॉप पोलिटिशियन की गिरफ्तारी होगी, हमारे पास पूरा इंतजाम है। महोदय, जिस दिन सुप्रीम कोर्ट के पास पूरा इंतजाम है महोदय, जिस दिन सुप्रीम कोर्ट के पास यह मामला आया, उस दिन दो ही संभावनाएं थी। एक तो यह कि बेल मिलेगी या दूसरी यह कि बेल नहीं मिलेगी। अगर बेल नहीं मिलेगी तो इस बात की तैयारी बिहार सरकार ने, प्रशासन ने क्यों नहीं की? चीफ सेक्रेटरी, डायरेक्टर जनरल पुलिस, डिस्ट्रिक्ट मेजीस्ट्रेट सीनियर एस.पी. वरैरह ने गिरफ्तारी रोकने की कोशिश की। आज आत्म समर्पण को बहुत बड़े त्याग और बलिदान की कहानी बनाया जा रहा है। आत्म समर्पण किस बात का? कोई डाकू मोहर सिंह है, वीरप्पन है कि नेगोसियेशन हो रहा है आत्म-समर्पण के लिए?

यह क्राइम, यह पोलिटीकल केस नहीं है। यह भ्रष्टाचार का केस है। यह क्रिमिनल केस है। चार्जशीटेड मामला है। क्यों पुलिस ने उन लोगों को रोका? क्या इसकी इन्क्वायरी आज आर्मी के ऊपर की जा रही है और सी.बी.आई. के ऊपर इन्क्वायरी की जा रही है? तूफानी, जो दलित है और तूफानी जी के दलित होने का इतना दर्द हो रहा है, भंडारी जी को तो सी.बी.आई. का डाइरेक्टर जो विश्वास है वह भी दलित है, उसके लिए क्यों नहीं आपको दर्द हो रहा है? ...  
(व्यवधान)... एक आदमी आज अच्छा प्रशासक है, इस गंडे माहौल में एक आदमी अच्छा काम कर रहा है, कर्तव्य कर रहा है, उसको भी आप लोग खा जाना चाह रहे हैं, ताकि कल कोई अच्छा काम न कर सके, कल कोई ऐसा काम करने से डरे, इसलिए कि पोलिटीशियन के सींग लगे होते हैं। ऐसी बात नहीं है। महोदय, मैं आपसे कह रहा था कि बिहार में यह गरीबी और यह जो विकास का पैसा लूटा गया है तीन साल में 1991, 1992, 1993 में, कौन इस

बात को मानेगा कि इन तीन सालों में 40 हजार मुर्गी, 5 हजार सूअर और 10 हजार मवेशियों के लिए जहां पैसा निकालना चाहिए था साढ़े दस करोड़ रुपया, वहां निकाली हुई है 254 करोड़ रुपया ...  
(व्यवधान)...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी)** : यह मुकदमा कोर्ट के सामने हैं। ...  
(व्यवधान)... यह कोर्ट के सामने हैं।

**श्री शत्रुघ्नि सिन्हा** : यह तथ्य भी है और क्या हम मान सकते हैं कि बिहार में इतना बड़ा घोटाला मुख्य मंत्री, वित्त मंत्री और गृह मंत्री की बिना मिली-भगत के हो सकता है? द्रनिया को पता है कि बिहार में तीनों एक ही है। मुख्य मंत्री भी एक है, गृह मंत्री भी एक है और वित्त मंत्री भी एक है। ट्रिपल रोल। उपसभाध्यक्ष महोदय, इसके लिए जब हाई कोर्ट ने बिहार सरकार के ऊपर स्ट्रिकर दिया तो रिजाइन नहीं किया। चार्जशीटेड हुए, रिजाइन नहीं किया। हाई कोर्ट से बेल नहीं हुई रिजाइन नहीं हुआ और हमारी भारत सरकार ने गिरफ्तार भी नहीं किया। सुप्रीम कोर्ट का वेट किया। मैं समझता हूं एक मजबूरी यह भी है। यह भी तथ्य है। इसलिए बता रहा हूं कि गुजराल साहब खुद राज्य सभा में आए हैं। पटना से कैसे आए हैं पता है? मैं अहलुवालिया जी को जानता हूं वह पटना के हैं, बिहार के हैं। क्या कोई आंखों में आंखें डाल कर कह सकता है कि गुजराल साहब, भारत के प्रधान मंत्री पटना के बाशिंदे हैं? 50 साल में क्या वह 50 दिन भी वह पटना में रहे हैं? क्या उन्हें पता है पटना में अंटाघाट किधर है, मुसलापुर हाट किधर है, लाल जी टोला किधर है, कदमकुआं किधर है? लेकिन एड्स है।  
(व्यवधान)...

**DR. BIPLAB DASGUPTA (West Bengal)**: You can put the same question to Shastriji. A professor in Calcutta representing the State of Uttar Pradesh!  
(Interruptions)

**THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI)**: Please take your seat.  
(Interruptions)

**श्री सोमपाल** : जरा सिकन्दर साहब के बारे में बता दें।  
(व्यवधान)...

**एक माननीय सदस्य** : अगर ऐसी बात है तो व्यक्तियों पर न जाएं।  
(व्यवधान)...

**श्री शत्रुघ्नि सिन्हा** : भंडारी जी, मैं अपने लोगों को भी कहूंगा, ...  
(व्यवधान)... लेकिन मैं कहना यह चाह रहा हूं ...  
(व्यवधान)... वह मैं किसी और सभा में कहूंगा।  
(व्यवधान)...

**श्री सतीश अग्रवाल :** अगर प्रधान मंत्री कोई होता है इस पद पर होता है तो उसको सुनना पड़ता है। ...**(व्यवधान)**... इसलिए कि वह प्रधान मंत्री है। ...**(व्यवधान)**...

**DR. BIPLAB DASGUPTA:** The same rule applies to everyone.

**श्री शत्रुघ्नि हिन्हा :** मैं उस पर किसी और सभा में किसी और दिन बात करूँगा। वह मेरा प्वायंट है। चाहे किसी पार्टी में हो, बी.जे.पी. में भी हो, यह फार्स हटा देना चाहिए। यह गलत है। या फिर जैसा लोक सभा में होता है, वैसे ही राज्य सभा में भी होना चाहिए। मैं उसका समर्थन नहीं कर रहा हूँ। मैं खुद कह रहा हूँ। लेकिन वह प्रधान मंत्री हैं इसलिए मैंने जिक्र किया। और यह डामा इन डिफेंस आपूँ द चीफ मिनिस्टर जिस तरह से बिहार में सरकार बनी है, जिस तरह बिहार में लडाई हुई है विधान सभा में जिस तरह से झारखंड जिसको कहा गया है ओवर माई डेड बॉडी उसी झारखंड के साथ मिलीभगत सौदेबाजी। जिस तरह से हमारे कांग्रेस के लोग कहते हैं करप्शन से ज्यादा खतरनाक कम्युनिज्म है और जितना करप्शन करके अपने आपको सरकार को लाते हैं वह कांग्रेस करप्शन और कांग्रेस कम्युनिज्म की बात कैसे कर सकती है? यह ठीक कहा उन्होंने 1984 के दंगे अभी तक भूले नहीं जिसमें कांग्रेस के लोग शामिल हैं और कांग्रेस हमें कम्युनल कहती है। हमें कम्युनल कहने का मतलब है देश की करोड़ों जनता की भावना का अपमान करना। We do not come through bullets. We come through the ballot.

हम चुनाव जीत कर आते हैं। इसलिए कम्युनल कहने का किसी को अधिकतर नहीं है। दूसरी बता अगर हम कम्युनल हैं तो दो सीटों से 12 साल पहले शुरू हो कर करीब-करीब 200 सीटों पर कैसे आए

“कुछ बात है कि हस्ती मिट्टी नहीं हमारी, सदियों रहा है, दुश्मन दौरे जमां हमारा।”

हम आगे ही बढ़ते चले जा रहे हैं। उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं ज्यादा समय आपका नहीं लेते हुए बिहार में जो दहशत देखी है, बिहार में जो दहशत जानी है, बिहार बंद के जो कांड हुए हैं, अगर यहीं बी.जे.पी. की सरकार होती तो....। स्टेट होम मिनिस्टर साहब बैठे हुए हैं, मैं इनकी जानकारी में लाना चाहूँगा, आपको जानकारी भी होगी कि वहां क्या स्थिति है, अगर यहीं जुकाम या नजला राज्य की बी.जे.पी. की सरकार को हुआ होता तो अब तक 356 का दुरुपयोग हो गया होता गुजरात में

दुरुपयोग किया गया 356 का, उत्तर प्रदेश में दुरुपयोग किया गया 356 का, लेकिन बिहार तड़प रहा है, राहत की सांस मांग रहा है, आपकी ओर आंख लगाकर देख रहा है, लेकिन आपके कानों पर जूँ तक नहीं रेंग रही है। आज एक कड़वे सच को मीठी मीठी चासनी डालकर झूठ में बदलने की कोशिश की जा रही है। गृह मंत्री जी अभी भी अगर नहीं जागे तो वह जो कहते हैं कि वहां ब्लड बाथ होगा, भगवान न करे वह स्थिति हो, अगर ऐसा नहीं भी हुआ तो जो अभी वहां दशहत का माहौल है, वह बहुत बड़े आतंकवाद में बदल जाएगा। पांखड बहुत हो चुका है, वहां पर जंगल राज है। लोग रात के 9.00 बजे के बाद शहर में बाहर नहीं निकलते हैं और जो गांव के मित्र हैं, वह शाम के 6.30 बजे, 7.00 बजे के बाद बाहर नहीं निकलते हैं। ...**(व्यवधान)**...

**श्री नरेश यादव :** बिल्कुल गलत है। आप बिहार में नहीं रहते हैं। आपको नहीं मालूम। ...**(व्यवधान)**...

**उपसभाध्यक्ष (श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी) :** आप बैठ जाइए। यादव जी, बैठ जाइए। ...**(व्यवधान)**...

**श्री नरेश यादव :** यह बात बिल्कुल गलत है। वह बम्बईया बाबू है, बिहारी बाबू नहीं रहे। ...**(व्यवधान)**...

**श्री शत्रुघ्नि सिन्हा :** मेरे आटोग्राफ लेने की कोई बात नहीं। पचास-पचास मील तक कोई गाड़ी क्रोस नहीं करती है। ऐसी दहशत है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं किसी व्यक्ति विशेष की बात नहीं करता। आप जो कहते हैं कि एक दलित औरत आई है तो बहुत तकलीफ है। बिल्कुल नहीं है, बहुत अच्छी बात है। मायावती जी की तरह वहां भी कोई दलित औरत आर्मी तो दूसरी बात थी। क्या उनकी पूरी पार्टी में, डेढ़-दो सौ लोग जो मिलजुल कर आए हैं, उनमें एक भी और कोई दूसरी महिला नहीं थी, जिसको वह ला सकते, जो काबिल हो, अनुभवी हो, गुणी हो ...**(व्यवधान)**...

**श्री रामदेव भंडारी :** आप कैसी बात कर रहे हैं? ...**(व्यवधान)**...

**श्री शत्रुघ्नि सिन्हा :** आपको ही बना देते, रंजन यादव जी को बना देते मुख्यमंत्री, किसी को बना देते, उसकी चिंता नहीं है। ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष महोदय, यह तो वही बात हुई, जो उन्होंने कहा था कि जेल से राज करेंगे। यह प्रोक्सी रूल

है। यह जेल से राज हो रहा है। वहां राज्य पुलिस इन्हें इसलिए नहीं गिरफ्तार कर सकी क्योंकि एक्यूज्ड और मुख्यमंत्री श्रीमती रावड़ी देवी एक ही घर में थे तो एक्यूज्ड की गिरफ्तारी के लिए किस पुलिस वाले की हिम्मत होती। वह सहमे हुए, डरे हुए सी.बी.आई. का रास्ता रोकते गए। सी.बी.आई. इस बात का इंतजार नहीं करेगी कि मुहूर्त निकाला जाएगा गिरफ्तार करने के लिए। आत्म-समर्पण की बात नहीं होती है। जब गुनाह हुआ, साधित हुआ तो चाहे आप हों या मैं हूं, कार्यवाही होगी। वह उनका अपना फैसला है, आज उस फैसले के खिलाफ बात हो रही है कि आर्मी के पास गए। मैं डिटेल में नहीं जाना चाहूंगा, संजय निरूपम जी ने आलरेडी वह डिटेल आपके सामने कही है। मैं यह कहना चाहता हूं कि जिस हालात में आर्मी के पास वह गए, उसकी नियत पर जाएं कि क्यों गए वह? जब सारी मशीनरी फेल हो गई, जब डी.एम. कोपरेट नहीं कर रहे, डी.जी.पुलिस थरथर कांप रहे हैं, डी.एस.पी. , एस.पी. एक तरफ किनारे खड़े हैं, अर्थात् वहां पर कोई मदद नहीं कर रहा, कोई कंटनजेन्सी प्लान नहीं, हाईकोर्ट का एफीडेविट देने के बाद तैयारी पूरी नहीं कि तो आखिरकार हताश होकर, परेशान होकर, निराशा होकर, मजबूर होकर जज का दरवाजा उसने खटखटाया और जज ने जो आदेश दिया उस आदेश का पालन करके न्याय प्रणाली को मजबूत करने की, लोकतंत्र को मजबूत करने की कोशिश की।

महोदय, अगर इन्क्वायरी होनी चाहिए तो उन लोगों पर होनी चाहिए उन पुलिस अफसरों पर होनी चाहिए बिहार प्रशासन के उन अधिकारियों पर होनी चाहिए, जिन्होने अडंगा लगाया, जिन्होने सी.बी.आई. की जांच नहीं होने दी। मैंने खुद कभी 356 का समर्थन नहीं किया, न मैंने कभी मांग की, लेकिन आज मैं तमाम लोगों का, विशेषकर आपका आभार प्रकट करते हुए कहना चाहता हूं कि समस्या अति गंभीर है, बिहार में इस वक्त और कोई चारा नहीं रहा, सारे चारे पहले खत्म हो चुके हैं, अब तो एक ही सारा है - प्रेसीडेण्ट रूल। धन्यवाद।

**THE VICE-CHAIRMAN (SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI):** The debate will continue ...*(Interruptions)*... All the speakers who were listed have spoken except the leader of the Opposition. ...*(Interruptions)*... The hon. Home Minister will reply tomorrow. ...*(Interruptions)*... The clarifications will also be given by the hon. Home Minister tomorrow. The House stands adjourned till 11.00 A.M. tomorrow.

The House then adjourned at twenty minutes past five of the clock till eleven of the clock on Wednesday, the 6th August, 1997.